ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ़ २०८२ जुलाई २०२५

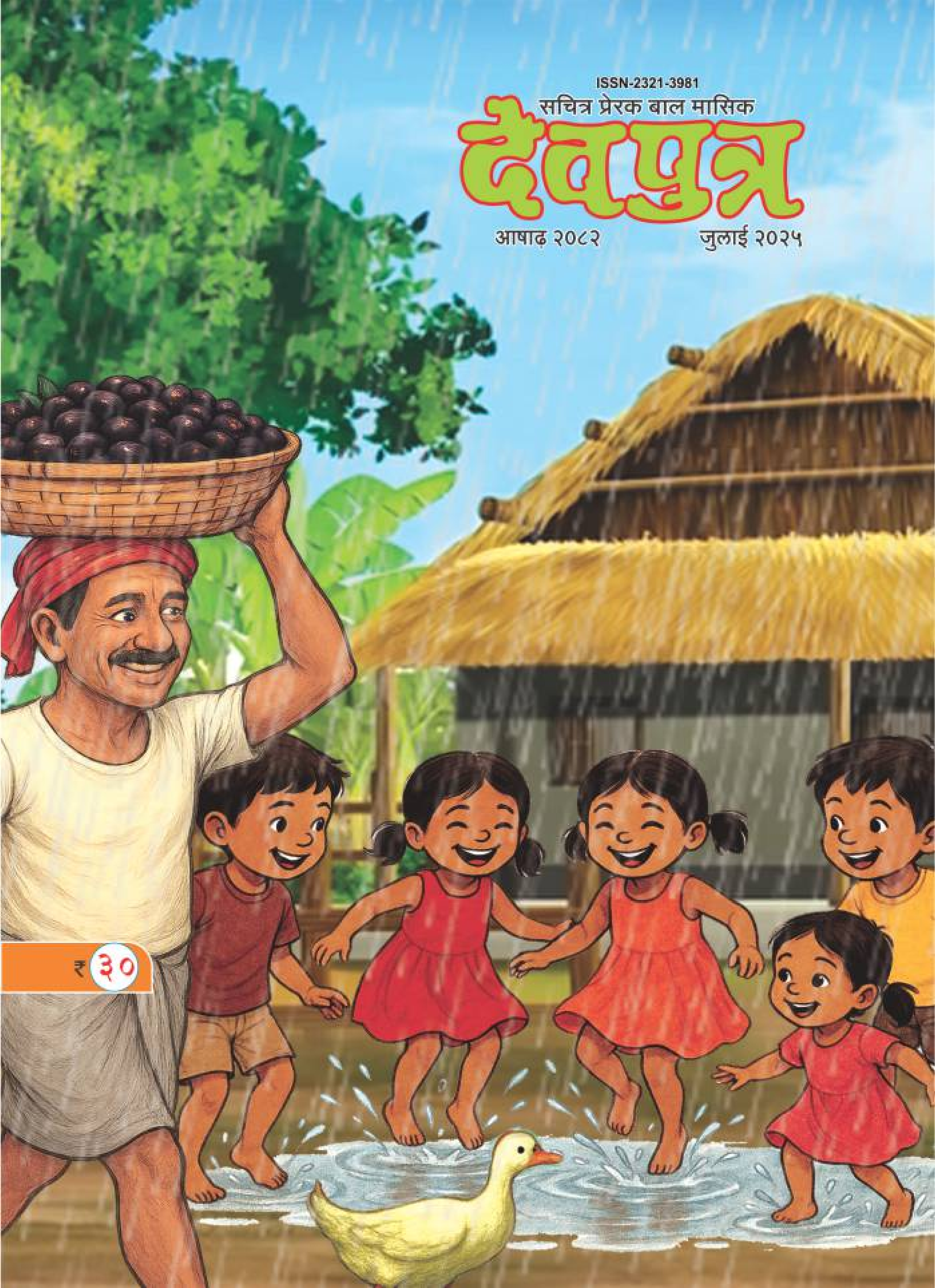

₹ ३०

पितांबरी®
रुचियाना™
द रिच टेस्ट!
छोटी-छोटी भूख का मीठा-मीठा पार्टनर!
रुचियाना गुड़ पाउडर
Pitambari®
Ruchiyana™
The Rich Taste!
Jaggery Powder
500 g
Hygienically Produced
Sweet & Delicious
Scan me to watch Jaggery recipes
लड्डू, चिक्की, पैनकेक्स, कुकीज जैसे अपने पसंदीदा स्नैक्स में चिनी की जगह गुड़ का इस्तेमाल करने से यह स्नैक्स मीठे, स्वादिष्ट और हेल्दी बनते है।
Pitambari Products Pvt. Ltd. Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699, Toll Free: 18001031299 | Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314.
Scan To Shop

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

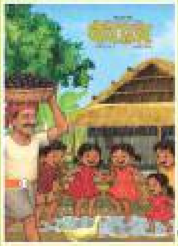

आषाढ़	२०८२	▪	वर्ष	४६
जुलाई	२०२५	▪	अंक	१

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आप सब अपनी नई कक्षाओं में पहुँचकर पढ़ाई में जुटे होंगे। आपके शिक्षक ही आपके शिक्षा गुरु हैं इसलिए उनका सम्मान करके, उनसे श्रद्धापूर्वक प्रश्न पूछकर आप उनसे अपने-अपने विषय का ज्ञान प्राप्त करें।

गुरु परम्परा हमारे देश की प्राचीन परम्परा है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। गुरु का महत्व विश्व के सभी पंथों, मतों, संप्रदायों में माना गया है तथापि 'गुरु' की जो अवधारणा भारतीय सनातन धर्म में है वह अन्यन्त्र दुर्लभ ही है।

'गु' यानी अंधकार 'रु' यानी उसको रोकने वाला यह 'गुरु' शब्द का भाव है। वैसे हमारी संस्कृति में जिससे भी कोई बात सीखने को मिले उसे 'गुरु' मानने का भी विधान है। भगवान दत्तात्रेय ने इसी आधार पर २४ गुरु बनाए थे। जहाँ कहीं भी हमें कोई सीखने योग्य आचार-विचार-संस्कार मिले उसे ग्रहण करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

लेकिन 'गुरु' का चयन करना बड़ा सावधानी का भी काम है। 'पानी पीजिए छान के, गुरु कीजिए जान के' ऐसी कहावत है, क्योंकि आज के युग में आदर्श गुरु यानी सद्गुरु मिलना कठिन है इसलिए शास्त्र सावधानी से गुरु बनाने की चेतावनी देते हैं। फिर भी एक और सूत्र है जो हमारी सहायता करता है कि 'गुरु कहे सो करना, गुरु करे वह करना आवश्यक नहीं।' सच्चाई या गहराई कितनी भी कम-अधिक हो पर गुरु कहलाने वाले प्राय: उपदेश तो आदर्श के ही देते हैं। भ्रम तब होता है जब वे स्वयं उसके पालन में कहीं कमजोर दिखाई देते हैं तब उपर्युक्त सूत्र हमारा मार्गदर्शन करता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने तो इसलिए भगवाध्वज को ही गुरु माना है जिससे किसी देहधारी मानव को गुरु मानने पर उसके जीवन में कोई अनुचित प्रसंग या आचरण दिखने पर भी हमारी श्रद्धा नहीं डिगे।

लेकिन गुरु होना अवश्य चाहिए। बिना गुरु का व्यक्ति 'निगुरा' माना जाता है। गुरुपूर्णिमा महर्षि वेदव्यास की जयन्ती होने से गुरुपूर्णिमा कहलाती है आइए, सच्चा गुरु चुने, उसकी सुनें और उसको गुनें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- जादुई एडवेंचर -सुमन बाजपेयी ०५
- चमके बिजली -नीना सिंह सोलंकी २२
- कहानी चन्दामामा की -रामगोपाल राही २६
- सच्चा साथी -विमला रस्तोगी ३०
- बूँदा आखिर है कहाँ ? -नीलू सोनी ४६

छोटी कहानी

- चन्दामाका की मिठाई -सुधा भार्गव ०७
- जानलेवा शौक -पवित्रा अग्रवाल १८
- मित्रता का महत्व -दिनेश 'दर्पण' ३६
- दोस्त की चिन्ता -हेमन्त यादव ४२

बाल लेखनी

- ऑपरेशन सिन्दूर -खुशी चंदोवा ३७

अनुवाद

- मोरू मूल मराठी -राजीव ताम्बे १०
  हिन्दी अनुवाद -डॉ. विशाखा ठाकुर

संवाद

- अनोखा है घोड़ा -हरीशचन्द्र पाण्डे २०
- बादल फटते क्यों हैं ? -सावित्री शर्मा 'सवि' २५

कविता

- वीर उधम सिंह -कल्याणमय आनंद ४५
- माँ की रसोई -सुकीर्ति भटनागर ५१

स्तंभ

- आपकी पाती - ०८
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १४
- छः अँगुल मुस्कान - १७
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भंडारी ३४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३५
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३८
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४४
- पुस्तक परिचय - ४८

बौद्धिक क्रीडा

- भूले बिसरे फलों की पहेलियाँ -सुधा दुबे १३
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ३३
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४१
- शाला की पहेलियाँ -रोचिका अरुण शर्मा ४९

चित्रकथा

- लालबुझक्कड़ काका के..... -देवांशु वत्स ०९
- बीमारी -संकेत गोस्वामी २९
- आज्ञाकारी राजू -देवांशु वत्स ४१

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ। विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जादुई एडवेंचर

– सुमन बाजपेयी

''यह चाँद कितना अजीब–सा दिख रहा है? संतरे की फाँक की तरह।'' ऊर्मि आसमान की ओर देखते हुए बोली।

''इसे साथ लाने की क्या आवश्यकता थी? कोई एडवेंचर करने के बजाय तू इसके प्रश्नों के उत्तर ही देते रहना। इतनी छोटी है पर हमेशा प्रश्न करती रहती है।'' नील ने चिढ़ते हुए कहा।

''क्या करता? जैसे ही कमरे से निकलने लगा, यह भी बिस्तर से उठ गई। साथ न लाता तो माँ–पिताजी को चिल्ला–चिल्ला कर उठा देती।'' सुजय के स्वर से निराशा झलक रही थी।

''बताओ ना भैया! आज चाँद पूरा गोल क्यों नहीं है?'' ऊर्मि ने सुजय के कंधों को झिंझोड़ा।

''अरे बाबा! पूरा गोल चाँद पूर्णमासी की रात दिखता है।'' वह झुंझलाते हुए बोला। उसकी दृष्टि एक पेड़ पर टिकी थी। उसके पत्ते हवा चलने के कारण हिलते हुए कुछ अजीब लग रहे थे।

''पूर्णमासी क्या?'' ऊर्मि का अगला प्रश्न था।

''अभी चुप हो जा! बाद में बताऊँगा।'' सुजय ने उसे डाँटा।

''कितनी देर हो गई तुम लोगों को आए?'' फुसफुसाते हुए मीरा ने पूछा उसके हाथ में डंडा था। वह हाँफ रही थी जैसे भागते हुए आई थी। ''अब आ रही है? कहा था न देर मत करना।'' नील ने कहा।

''बड़े भैया मेरे कमरे से जा ही नहीं रहे थे। गणित के प्रश्न समझाने का जैसे उन पर भूत सवार था। परीक्षा जो आ रही है। अच्छा छोड़ो! बताओ कुछ दिखा?'' मीरा ने उत्सुकता से पूछा।

''कुछ भी नहीं। रात आज कुछ अधिक ही डरावनी है। हमें नहीं आना चाहिए था। घर से दूर भी है यह उद्यान... कहीं कुछ...।''

''अरे डरो मत। कुछ नहीं होगा। डंडा है न मेरे पास। वैसे भी उद्यान कहाँ है यह अब। किसी जंगल से कम नहीं लगता। कब से तो उजाड़ पड़ा है, कोई देखभाल नहीं करता। लेकिन लोगों से कहते सुना है कि रात के समय यदि यहाँ से निकले तो लगता है कुछ तो हलचल हो रही है। अजीब–अजीब सी आवाजें तक सुनी हैं कुछ लोगों ने।'' मीरा ने ज्ञान दिया। वह नील और सुजय से आयु में दो वर्ष बड़ी थी और स्वयं को बहुत समझदार समझती थी।

''भ्रम भी तो हो सकता है लोगों का। उनकी बातों के साथ स्वयं की कल्पनाएँ जोड़ मिर्च–मसाला लगाकर बातों को मत बताया कर मीरा। देरी आदत भी है चीजों को बढ़ा–चढ़ाकर बताने की।'' सुजय ने उसे छेड़ा।

''चुप...।'' नील ने मुँह पर अँगुली रखते हुए संकेत किया। फिर वे एक घने पेड़ के नीचे बैठ गए।

''मुझे सामने एक छाया नजर आ रही है। समझ लो आज तो कुछ न कुछ एडवेंचर होकर ही रहेगा।'' वह धीमे स्वर में बोला।

''कहीं हमें कोई पकड़ न ले। वापस चलो भैया!'' ऊर्मि काँप रही थी। ''कुछ नहीं होगा। बस अपना मुँह बंद रख।'' सुजय ने आँखें तरेरीं।

ऊर्मि रोने ही वाली थी कि पत्तों पर चमकते जुगनू की रोशनी देख, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह बहुत ध्यान से उस रोशनी को देखने लगी।

''यह छाया किसकी हो सकती है?'' सुजय ने पूछा। ''क्या इस जंगलनुमा उद्यान को बुरे लोगों ने अपना अड्डा बनाया हुआ है? मैंने बहुत-सी फिल्मों में ऐसा देखा है कि वीरान स्थान का उपयोग गुंडे टाइप के लोग गलत काम करने के लिए करते हैं।''

''तू फिल्मी मत हो।'' नील बोला। ''हम एडवेंचर पर निकले हैं और तेरे दिमाग में घिसे-पिटे विचार आ रहे हैं। चलो, आगे चलकर देखते हैं। अच्छा हुआ मीरा डंडा ले आई। इससे हम अपनी सुरक्षा कर सकते हैं।'' नील ने बहादुरी दिखाते हुए कहा और खड़ा हो गया।

तीनों उसके पीछे-पीछे चल दिए। वे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। हैरानी की बात तो यह थी कि छाया न हिल रही थी न ही आगे-पीछे हो रही थी। धड़कते दिल और घबराते हुए जब वे छाया तक पहुँचे तो चारों ही खिलखिलाकर हँस पड़े। वह तो एक घने, विशाल पेड़ की छाया थी जो किसी मानव आकृति की तरह लग रही थी।

''पेड़ कुछ अजीब-सा नहीं है क्या?'' मीरा ने कुछ सोचते हुए कहा। ''मैंने पढ़ा है ऐसे पेड़ों में जादू होता है।''

''तू और तेरे ख्याली पुलाव।'' सुजय हँसा।

''सच कह रही हूँ। देखो पेड़ का तना दरवाजे की तरह लग रहा है। कुंडी भी लटकी हुई है।'' नील और सुजय ने देखा वास्तव में वह छोटा-सा दरवाजा ही था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस पर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में एक पहेली लिखी हुई थी।

''मैं बिना पंखों के उड़ सकती हूँ। बिना पैरों के यहाँ से वहाँ जा सकती हूँ। कौन हूँ मैं?'' मीरा ने जैसे ही उसे पढ़ा ''हवा!'' नील एकदम बोला। यह कहते ही दरवाजा खुल गया। वे हैरानी से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। पेड़ पर दरवाजा? कोई सपना तो नहीं देख रहे थे वे? वास्तव में वे क्या किसी जादुई दुनिया में प्रवेश करने वाले हैं?

आए तो वे एडवेंचर करने के उद्देश्य से ही थे, लेकिन इस तरह कोई दरवाजा खुलेगा उनके सामने, उन्होंने सोचा न था।

अंदर जाएँ या न जाएँ, वे सोच ही रहे थे कि ऊर्मि अंदर प्रवेश कर गई। उसे तो इस एडवेंचर में अब सबसे अधिक आनंद आ रहा था। अंदर एक बूढ़ा बैठा था। बौना बूढ़ा... किसी प्लास्टिक के गुड्डे की तरह लग रहा था।

''आओ बच्चो! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। इस उद्यान का जो अब उजाड़ हो गया है और एक जंगल का रूप लेने लगा है, की रक्षा नहीं कर पा रहा। तुम्हें इस सुंदर रूप देना होगा ताकि यहाँ के जीव और पेड़-पौधे सुरक्षित रह सकें और बुरे लोग अपना ठिकाना न बना पाएँ।''

इससे पहले वे कुछ समझ या कह पाते, उससे पहले ही वह बूढ़ा अदृश्य हो गया। उन्होंने देखा कि वे चारों पेड़ के बाहर खड़े हैं और कोई दरवाजा भी दिखाई नहीं दे रहा था। यहाँ तक कि कुंडी भी नहीं थी अब। बस चारों ओर जुगनू चमक रहे थे। वे वापस लौटते समय सोच रहे थे कि यह कोई स्वप्न था या वास्तव में एडेंचर।

चाहे जो भी था, उद्यान को सुंदर रूप देकर फूल-पौधों और जीवों की सुरक्षा का दृढ़ निश्चय उनके मन में पलने लगा था।

ऊर्मि जो सुजय का हाथ थामे चल रही थी, अचानक आसमान की ओर देखते हुए बोली- ''यह चाँद कितना अजीब-सा दिख रहा है न? बिलकुल उन बूढ़े बौने काका की तरह।''

''चुप!'' तीनों एक साथ बोले और खिलखिलाकर हँस पड़े।

- दिल्ली

चंदा मामा की मिठाई

– सुधा भार्गव

''माँ! तुम हमेशा कहती रहती हो चंदा मामा दूर के पुए पकाए बूर के। चंदा मामा कहाँ दूर रहते हैं अभी तो चंद्रयान से विक्रम और प्रज्ञान भैया उनसे मिलने गए हैं। मैं भी चंदा मामा से मिलने के लिए जाऊँगा।''

''पागल हुआ है। इतनी दूर कैसे जाएगा ?''

''अंतरिक्ष यान में बैठकर जाऊँगा।''

''वहाँ ठंड तो बहुत पड़ती है, अँधेरा ही अँधेरा रहता है।''

''वहाँ खूब सारे दीपक ही दीपक जला दूँगा। अँधेरा चुटकियों में भाग जाएगा।''

''इतने सारे दीपक लेकर जाएगा कैसे ?''

''माँ! हमारे देश के वैज्ञानिक वीर सिपाही भी है। जान जोखिम में डालकर नई–नई खोजें करते हैं। कुछ ही समय में वे ठंड को गर्मी में बदल देंगे, अँधेरे में उजाला भर देंगे।''

''उससे भी क्या होता हैं ? वहाँ न खाने को है न पीने को। न जाने साँस भी ले पाते होंगे या नहीं। तू जाएगा तो विपत्ति में फँस जाएगा। न बेटा! मैं नहीं जाने दूँगी तुझे।''

''ओ माँ! तुम गलत समझ रही हो। वहाँ पर पानी भी है। हवा भी है। साँस लेने के लिए ऑक्सीजन और मिट्टी भी है।''

''यह सब तेरे विक्रम भैया ने ही कहा होगा। अरे वहाँ कुछ नहीं है।''

''माँ! मैं तो जाऊँगा। अपने देश का झंडा वहाँ गाड़कर दिखाऊँगा। लोगों को ज्ञात होगा कि जमीन पर नहीं आकाश में भी मेरा देश भारत है।

हम गर्व से दुनिया में सिर ऊँचा करके रहेंगे। जो देश समझते हैं हम कुछ नहीं कर सकते उनको उनसे भी आगे बढ़कर दिखलाएँगे।''

''उफ् बड़ी–बड़ी बातें। रहने को वहाँ एक झोपड़पट्टी तक तो है नहीं।''

''थोड़ा रुक माँ! वहाँ गाँव भी बस जाएँगे। खेती–बड़ी भी होने लगेगी।''

''अब यह कौन कह रहा था! तेरा विक्रम भैया ही कह रहा होगा! अरे तुझे क्या धुन सवार हो गई।''

पहले सोचता था, पिताजी की तरह बॉर्डर पर जाकर लड़ूँगा। लेकिन अब सोचता हूँ चंद्रमा पर जाकर बड़ा–सा बम बनाऊँगा। जैसे ही दुश्मन ने भारत की ओर तिरछी निगाह से देखा बस, बम धड़ाक कर दूँगा।''

''अधिक उत्साह में मत आ। लड़ाई में सबका बहुत नुकसान होता है। बच्चे तो बेचारे बिना बात के मारे जाते हैं।''

''ठीक है तुम्हारी बात मैंने मान ली पर माँ मुझे जाने को मना न करना।''

''तूने तो मुझे चिंता में डाल दिया। अपने मामा से मिलने जाएगा तो भैया के लिए मुझे कुछ उपहार भी तो भेजने पड़ेंगे ?''

''अरे! तू इसकी चिंता न कर। मैंने सुना है उसके घर में जगह-जगह गड्ढे पड़े हुए हैं। समझ नहीं आता यह गड्ढे कैसे पड़ गए। अवश्य वहाँ कोई ऐसा होगा जो उसे सता रहा है।''

''यहाँ भी तो मिट्टी खोदकर ले जाते हैं। पेड़ों को भी नुकसान पहुँचता है। मिट्टी कम होने से पृथ्वी माँ को कितना कष्ट होता होगा।''

''ऐसे ही कुछ स्वार्थी लोग वहाँ भी पहुँच गए होंगे। उन सबका पता लगाकर उन्हें समाप्त कर दूँगा।''

''उफ! यह तो बाद की बात है। अभी तो मुझे तैयारी करनी पड़ेगी।''

''उफ्! मेरे दिमाग में एक बात आई! मिट्टी ले जाऊँगा। मिट्टी से उसके गड्ढे भरूँगा। मामा बहुत प्रसन्न हो जाएगा।''

''बहन तो अपने हाथ की बनी चीज भेजती है। समझ नहीं आ रहा... क्या भेजूँ ?''

''एक डिब्बे में मिट्टी दे दे। दूसरे में खूब सारी मिठाई। मामा नहीं खाएगा उसका भांजा खा लेगा। हो गए दोनों काम।''

''चल चल अधिक घोड़े मत दौड़ा। पहले कुछ बन के दिखा।''

''चंदा मामा से मिलने के लिए मुझे कितनी तपस्या करनी पड़ेगी माँ!''

''इतनी सारी।'' माँ ने दोनों बाँहें फैला दीं।

''वह भी कर लूँगा माँ।''

भोले मुख से प्यारी-प्यारी बात सुनकर माँ ने उन बाहों में बच्चे को कसकर जकड़ लिया।

- बेंगलुरू (कर्नाटक)

संपादक जी! 'देवपुत्र' का मई २०२५ अंक सामयिक उपयोग की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपने भैया-बहिन, विद्यालय से मिली इस गरमी की छुट्टी कैसे बिताएँ? यह प्रश्न सुनने में तो कठिन है, लेकिन वर्षभर मन में कसमसाती अभिरुचियों को कार्यान्वित करने का उपाय सरल है। बहुत तपन और उमस से भरे दिनों में अपने सँजोए सपने कैसे पूरे किए जा सकते हैं? जहाँ चाह, वहाँ राह की सूक्ति के अनुसार बालवृंद की दशा को सदुपयोगी दिशा देने हेतु आपका स्नेहिल सुझाव सेतु के समान है। मनोवांछित रंग-ढंग से अपनी सुरुचि को कई रूप देकर इस बड़ी छुट्टी में खालीपन की ऊब से कुट्टी होने का अवसर पाना प्रशंसनीय है।

अपनी अभिरुचि के मंच पर एक यह कार्य भी बड़ा टंच है, कि वर्तमान चौमासे में बीजारोपण या पौधारोपण शुरु कर दिया जाए। गरमी में लोग द्वारा आम चूसने के बाद उनकी गुठलियों को कचरे जैसा फेंक दिया जाता है। वर्षा के पानी के प्रभाव से यहाँ-वहाँ पड़ी गुठलियाँ अँकुरित होकर दिखाई देती हैं, जो बाद में व्यर्थ सूख जाती हैं। बच्चे अपनी कलात्मक अभिरुचि के साथ प्रकृति के प्रति प्रेम जगाते हुए उन हरियाली गुठलियों को घर से लेकर बाहर तक रोप सकते हैं। वे धन्य हैं जो 'आम के आम गुठली के दाम' की कहावत को चरितार्थ करते हैं।

नाट्यांश 'लोकमाता अहिल्या' उमेश कुमार चौरसिया, विनोद रस्तोगी:आधुनिक युग के एकांकीकार, प्रस्तोता-डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' तथा 'किलकारी:मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी अनूठा अनुष्ठान' आदि बहुत प्रेरणात्मक हैं। मुखपृष्ठ पर बच्चों को संबोधित करती हुई ममतालु दादी की भावनात्मक मुद्रा दर्शनीय है।

- राजा चौरसिया, उमरियापान (म. प्र.)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे

-देवांशु वत्स

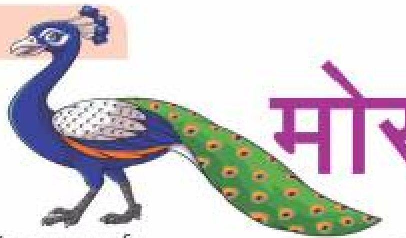

मोरू

मूल मराठी – राजीव तांबे (पुणे)
अनुवाद – डॉ. विशाखा ठाकुर (ठाणे)

पहले भोर हुई, फिर सुबह हुई।

रातभर ठंडी हवा से सिकुड़े रहे पेड़, सुबह ताजे हो गए।

जंगल उठ रहा था।

पेड़ डोलने लगे। पत्ते सरसराने लगे।

पंछियों की चहचहाट शुरु हो गयी।

और, बच्चों ने खाने के लिए मचलना शुरु किया।

यहाँ–वहाँ लेटकर फैले हुए प्राणी खड़े होने लगे।

खड़े–खड़े सोने वाले प्राणी उठ गए।

उन्होंने दोनों पैर खींचकर आलस देते हुए अपने बदन चाटने शुरु किए।

तब उनके बदन से अपना बदन रगड़ते हुए उनके बच्चों ने कहा– ''ऊँऽऽऽ भूख लगी है नाऽऽऽ।''

उसी समय जंगल का मोर उठ गया।

मोरनी उठ गई।

मोर पंखों को संभालते हुए मोर ने बगल की घास में झाँककर देखा। उसे अपना बच्चू ही दिखाई नहीं दिया। मोर डर गया।

उसने जोर से मोरनी को आवाज दी– ''मियाँऽऽऽऽ मियाँऽऽऽऽऽ अरी, यहाँ आ जाओ झटपट। जल्दी से भागकर आओ।''

मोरनी सच में जल्दी–जल्दी वहाँ आ गई।

मोरनी ने आते ही झुँझलाकर कहा– ''क्या हुआ जो सुबह–सुबह चिल्ला रहे हो? मैं जरा पंख साफ कर रही थी... और....''

उसे रोकते हुए मोर ने डरते–डरते कहा– ''अरी! अपना मोरू कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। यह बच्चू रात की नींद में कहाँ गया पता नहीं?''

यह सुनते ही मोरनी बहुत ही अधिक डर गई।

मोरनी ने अगल–बगल..

ऊपर–नीचे...

पेड़ों के आगे–पीछे...

पौधों के पीछे....

नदी के किनारे पर टुकुर–टुकुर देखा।

उसे अपना बच्चू कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

उसे समझ नहीं आया, यह कैसे हो गया?

मोरनी ने घबराकर कहा– ''सुनिए, अपना मोरू न जाने कहाँ चला गया? दिखाई नहीं दे रहा है। मुझे ना जी, बहुत चिंता हो रही है।

कहीं जाना था तो क्या बताकर नहीं जा सकता था? अब मोरू को कहाँ–कहाँ ढूँढ़ें?

अब मन में बुरे–बुरे विचार आने लगे हैं।'' डर के मारे माँ के चार पंख ही गिर गए।

मोर ने अपने सिर का ताज हिलाते हुए कहा– ''हँ हँ! डर क्यों रही हो? चलो हम ढूँढ़ते हैं।

अपना मोरू बच्चू बहुत होशियार है ना! ऐसे ही कहीं, यहाँ–वहाँ गलत स्थान पर जाएगा ही नहीं।''

मोरनी का थोड़ा धीरज बँधा।

मोर गर्दन हिलाते हुए, तेज–तेज चलते हुए मोरू को ढूँढ़ने लगा। यहाँ–वहाँ देखने लगा।

कूदी लगाते हुए, गर्दन ऊँची करके, मोरू को जोर–जोर से आवाज देने लगा– ''मियाँऽऽऽ, मियाँऽऽऽ, मोरू ऽऽऽ, अरे मोरू ऽऽऽ, बच्चाऽऽऽ।''

तभी पेड़ के पीछे की घास से आवाज आई– ''मऽऽऽआँ!, पिऽऽऽताजी! मैं यहाँ हूँ। मैं यहीं तो हूँ ना।''

मोर अपने पंखों का फैलाव समेटते हुए दौड़कर

मोरू के पास गया। जाते समय बच्चू के लिए खाना ले गया।

माँ तो दौड़ते हुए मोरू के पास आई। माँ ने अपने पंखों से मोरू को थपथपाया।

चोंच से गर्दन के पास, गले के पास कूचुकूचु खुजाया।

पिताजी के लाए हुए दो बड़े-बड़े नरम मुलायम कीड़े उसने मोरू बच्चू को जबरदस्ती खिलाए।

मोरू ने ना-नुकूर करते हुए कीड़े निगल लिए और पिताजी के पंखों से अपनी चोंच रगड़कर मोरू ने अपना मुँह पोंछ लिया।

मोरू को अपने गले से लगाकर माँ ने कहा- ''कहाँ गया था मेरा बच्चा, बिना बताए?

हमें कितनी चिंता हो गई थी तुम्हारी।

जान ऊपर-नीचे हो रही थी।

कितना घबरा गई थी बेटा मैं!

फिर से ऐसा कभी मत करना।

कहीं जाना हो तो ठीक से बताकर जाना बेटा।

और रात-बेरात तो बिल्कुल भी कहीं नहीं जाना है, समझे।''

माथे का छोटा-सा ताज, माँ के गले पर रगड़ते हुए मोरू ने कहा- ''माँ! मुझे न, कल रात नींद ही नहीं आई।

मैंने बीच में आँखें खोलकर देखा, तो आप सब बड़े आराम से गहरी नींद में सो रहे थे।

किन्तु मुझे तो बहुत कष्ट हो रहा था। बार-बार कुट-कुट कष्ट।

फिर मैं धीरे से उठा।

धीमे से चलकर उस पेड़ के पास गया। धीरे से उड़कर उस सामने वाली नाटी टहनी पर जाकर बैठ गया।

सब ओर टुकुर-टुकुर देखा। तो....

मैं अकेला ही जगा हुआ। बाकी सब, मतलब सभी पंछी सोए हुए। सभी प्राणी सोए हुए। खुशी-खुशी सोए हुए। लेकिन मुझे अकेले को ही कष्ट हो रहा था। बार-बार कुट-कुट कष्ट।

फिर मैं वहाँ से उड़कर उधर, उस नदी के पास के ऊँचे टीले पर जा बैठा।

वहाँ मेंढक मामा जागे हुए। मक्खियाँ जगी हुई। रात के कीड़े जगे हुए। मच्छर चाचा जगे हुए। उन सबने पूरी तरह मेरा दिमाग खराब कर दिया।

डरूँव डरूँव, गूँ गूँ गूँ गूँ, किरर किरर किरर किरर ऽऽऽ और फिर से....

वे सभी खुश लेकिन बस मुझे अकेले को ही परेशानी। बार-बार कुट-कुट कष्ट।

फिर तो मैं उस पेड़ के नीचे की नरम-नरम, मुलायम घास में छुप गया।

और....

कब मुझे नींद आ गई यह तो मुझे पता ही नहीं चला न माँ।''

माँ ने मोरू को समझाते हुए कहा– ''अरे मोरू! मेरे बच्चे, तुझे कष्ट हो रहा था, नींद नहीं आ रही थी तो तुमने मुझे।

आवाज क्यों नहीं दी ?

मैंने मोर गीत गाए होते।

तुझे प्यार से थपथपाया होता।

मेरे पंखों का कम्बल ओढ़ाया होता।

चोंच से तेरे पंखों की सुंदर कंघी की होती।

पिताजी ने तो अपने पंखों को फैलाकर तेरे लिए बढ़िया–सा 'थई–थई नृत्य' भी किया होता।

अँ... वह देखो, पिताजी तुम्हारे लिए बढ़िया–बढ़िया खाना लेकर आ रहे हैं।''

मोरू झुँझलाकर बोला– ''मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा गाना।

मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा थपथपाना।

मुझे नहीं चाहिए पिताजी का नृत्य।

मुझे अकेले को ही यह कष्ट होता है।

बार–बार कुट–कुट कष्ट।''

मोरू बच्चे को और भी अपने पास खींचते हुए माँ ने कहा– ''ऐसे क्रोधित क्यों हो रहे हो मेरे बछड़े ?''

तुझे आखिर हुआ क्या है ?

कौन–सा दु:ख हो रहा है ?

कौन–सा कुट–कुट कष्ट है ?

मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा।

तुम्हारी चिंता से देखो मेरी जान भी सूख रही है।

सब कुछ मुझे ठीक से बताओ ना बच्चू।''

माँ ने 'बच्चू' कहा तो मोरू खुश हो गया।

माँ की ओर देखकर उसने अपने सिर का ताज इतराकर हिलाया।

एक पैर को मोड़कर गर्दन टुकु–टुकु घुमाई।

इतने में पिताजी खाना लेकर आए।

मोरू ने पिताजी के पंखों के फैलाव पर धीरे–से अपनी चोंच घुमाई और बोला– ''कल रातभर मेरे पेट में, पीठ में कुछ तो भी कुट–कुट चुभ रहा था।

इसलिए मुझे नींद ही नहीं आई।

टहनी पर बैठा, तब भी कुट–कुट चुभता है।

पत्थर पर बैठा, तब भी कुट–कुट चुभता है।

घास में छुप गया....।''

यह सुनते ही माँ मोरनी खुशी से चिल्लाई– ''मियाँऽऽऽ रे, मियाँऽऽऽ रे, अरे, मेरे मोरू बच्चे–

अब तुम मोरू नहीं रहे। मोरू नहीं रहे।

तुम... अब मोर... बन गए हो... मोर!!

मोरपंख के आने से पहले हर मोर को थोड़ा–सा कष्ट होता है मेरे बच्चे! मोर पंख के आने से पहले पेट में, पीठ में थोड़ी–थोड़ी कुट–कुट

चुभन होती है बछड़े।

अरे मोरू!

अब तुझे भी पिताजी की तरह मोर पंखों का बढ़िया, लंबा, सुंदर फैलाव मिलेगा।

उसे संभालते हुए, तू इतराकर चलेगा।

ठुमक–ठुमककर चलेगा।

इस वर्ष बरसात में....

तू पिताजी के साथ, अपना मोर पंखी सुंदर–सुंदर फैलाव फैलाकर मस्त–मस्त नाचेगा।

मेरा बच्चू मोरू.....

अब मोर बन गया रे, मोर!!''

खुशी से माँ की आँखें छलक आईं।

मोरू की ओर देखते हुए उसने धीरे से अपनी आँखें मूँद लीं।

पिताजी ने अपना मोर पंखी फैलाव फैलाया।

और नाचते हुए मेरू के आस–पास चक्कर लगाए। और अचानक.... मोरू भी पिता मोर की तरह नाचने लगा। माँ मोरनी ने धीरे–से आँखें खोलकर देखा, तो.... उसके सामने नाच रहे थे, सुंदर मोर पंख फैलाए हुए... दो मोर!!

– ठाणे (महाराष्ट्र)

भूले–बिसरे फलों की पहेली

– सुधा दुबे

१)

फूल नहीं है यह तो फल,
पीला है, कत्थई होगा कल।
रंग बदलता, रूप बदलता,
पूजा में चढ़ता, पीना नहीं जल।।

२)

ना मैं चीकू ना मैं अनार,
चीकू जैसे बीज हैं चार।
भूला–बिसरा मीठा फल,
मोटा छिल्का गूदा रेशेदार।।

३)

कच्चा हरा, पक्का लाल,
इल्ली–सा, पर नहीं चाल।
पक्षी खाते चाव से बैठ डाल,
तुम भी खा लो बाल गोपाल।।

४)

अचार हूँ पर खट्टा नहीं,
खाते छिलका बीज नहीं।
काला छिलका भूरा बीज,
फोड़ो बीज, खाओ मेवा।।

५)

आयुर्वेदिक गुणों में भरपूर,
खनिज लवण इसमें पाओ।
कच्चा खाओ नमक लगाय,
पका यूँ ही चट कर जाओ।।

– भोपाल (म. प्र.)

उत्तर– १) महुआ। २) तेंदू। ३) शहतूत।
४) अचार। ५) कबीट (कैथा)।

देवपुत्र के प्रबंधन्यासी हिन्दुस्तान ऐयरोनाटिक्स लि. के निदेशक हुए

इन्दौर। गौरव के क्षण हैं कि 'देवपुत्र' के यशस्वी प्रकाशक और प्रबंधन्यासी सीए. राकेश जी भावसार ने भारत के अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त महत्त्वपूर्ण संस्थान हिन्दुस्तान ऐयरोनाटिक्स लिमिटेड बैंगलुरू में निदेशक का दायित्व ग्रहण किया है। तेजस, ध्रुव हेलीकाप्टर जैसे अनेक सामरिक महत्व के श्रेष्ठ विमानों को बनाने वाली यह कम्पनी देश की प्रमुख नौ कम्पनियों में एक है।

श्री. राकेश जी भावसार को इस नवीन दायित्व के लिए शुभकामनाएँ, बधाई, अभिनंदन।

– देवपुत्र परिवार

लाखों बच्चों की चहेती लेखिका–शांति अग्रवाल

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

शांति अग्रवाल अपने समय की लोकप्रिय कवयित्री थीं। बच्चों के लिए भी उन्होंने सहज कंठस्थ होने वाली लाजवाब रचनाएँ लिखीं। पद्य में ही नहीं, गद्य में भी उनकी लेखनी का जादू देखते ही बनता है।

शांतिजी का जन्म २३ जुलाई १९२० को बरेली में श्री. श्यामाचरण वैश्य और श्रीमती विद्यावती की लाड़ली के रूप में हुआ। ग्यारह वर्ष की अवस्था से जागी उनकी लेखन अभिरुचि आजीवन बनी रही। उनकी पहली रचना उनके गुरुवर नम्र जी के सहयोग से १९३१ में 'प्रेम संदेश' में प्रकाशित हुई।

शांति जी अपनी नैसर्गिक रचनाओं के बल पर लोकप्रियता के आकाश को छुआ। वे श्रृंगार, हास्य और वात्सल्य तीनों रसों में निष्णात थीं। उनकी बाल कविताओं की पहली पुस्तक 'बाल वीणा' १९५६ में प्रकाशित हुई।

बच्चों के लिए लिखी उनकी प्रमुख काव्य पुस्तकों में राष्ट्र के गीत और नाद (स्काउटिंग के बच्चों के लिए गीत), मेरा देश महान है, अगड़म–बगड़म, दुल्हन आई गोल–मटोल, आई एक खबर, बाल कथा पुस्तकों में जान आफत में, अधूरी छतरी, पाँच नारी रत्न इत्यादि एवं जीवनी साहित्य में राजेन्द्र बाबू से डॉ. कलाम तक प्रमुख हैं।

उनके निधन के बाद २०२३ में 'झमा झम झम' शीर्षक से संयुक्त बाल–गीत संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें उनके साथ–साथ उनकी तीनों पुत्रियों प्रो. पूनम अग्रवाल, डॉ. रंजना अग्रवाल और रश्मि अग्रवाल की भी बाल कविताएँ शामिल थीं। निःसंदेह यह अपने तरह का एकदम अलग प्रयोग था। जिन लेखकों की संतति भी साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न होती हैं निःसंदेह उनका यश सहज ही विस्तार पाता है। हर्ष का विषय है कि शांति अग्रवाल जी के नाम से स्मृति पुरस्कार भी दिया जा रहा है।

बड़ों के लिए भी शांति जी की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें स्वतंत्रता संग्राम (ऐतिहासिक प्रबंध काव्य), गौरव पथ (आलेख), जयघोष (गीत काव्य), राधा माधव (गीत), स्नेहिल बंधन (गीत), अनुगुंजन (गीत), नहीं खोपड़ी में कुछ आई (हास्य कविताएँ) प्रमुख हैं। उनकी रचनाओं के ऑडियो–वीडियो भी उपलब्ध हैं। सरकारी, असरकारी पाठ्यक्रम के माध्यम से उनकी बाल–कविताएँ लाखों बच्चों के लिए शिक्षा आनंद का माध्यम बनी हैं। उनकी कविताओं में वैज्ञानिक चिंतन भी है और बच्चों को चिंतनशील बनाने की सामर्थ्य भी। किस्सागोई शैली में लिखी गई उनकी बाल कविताओं का तो रंग ढंग ही अनूठा है। वे बाल मन को समझ–बूझकर लिखने वाली सफल कवयित्री थीं।

शांति जी को बाल साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु अनेक पुरस्कार और

सम्मान मिले जिनमें हिन्दी अकादमी दिल्ली का बाल–साहित्य पुरस्कार और श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया बाल–साहित्य पुरस्कार प्रमुख हैं।

वे जीवन के अंत तक सक्रिय रहीं। उन्हें अपनी रचनाएँ मुँह जबानी याद थीं। २६ अप्रैल २०२१ को दिल्ली में उन्होंने अंतिम साँस ली।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ मजेदार रचनाएँ–

टिम टिम तारे

आसमान में चमक रहे जो
'टिम–टिम' तारे,
मोती जैसे उजले, नन्हें,
प्यारे–प्यारे।
इनका भेद बताऊँ तो क्या
तुम मानोगे?
बिना बताए लेकिन सच
कैसे जानोगे?
इन्हें न समझो छोटे, ये तो
बहुत बड़े हैं,
कुछ तो सूरज से भी
लाख गुना तगड़े हैं।
दिखते तुम्हें सफेद,
मगर हैं रंग–रंगीले,
कुछ नारंगी, लाल और
कुछ नीले, पीले।
जुगनू जैसे दिखने वाले
झिल–मिल तारे,
सूरज–से चमकीले हैं
सारे–के–सारे।
दूर बहुत हैं इसीलिए
लगते हैं ऐसे,
'टिम–टिम' तारे नन्हें–नन्हें
मोती जैसे।

समय का फेर

बच्चों की टोली को लेकर,
टीचर पहुँचे जैसलमेर।
बोले, बच्चो! सुनो ध्यान से,
क्या है समय–समय का फेर।
कैसे–कैसे अजब–अनोखे,
खेल दिखाता है भगवान।
कभी यहाँ लहराया सागर,
आज यहाँ है रेगिस्तान।

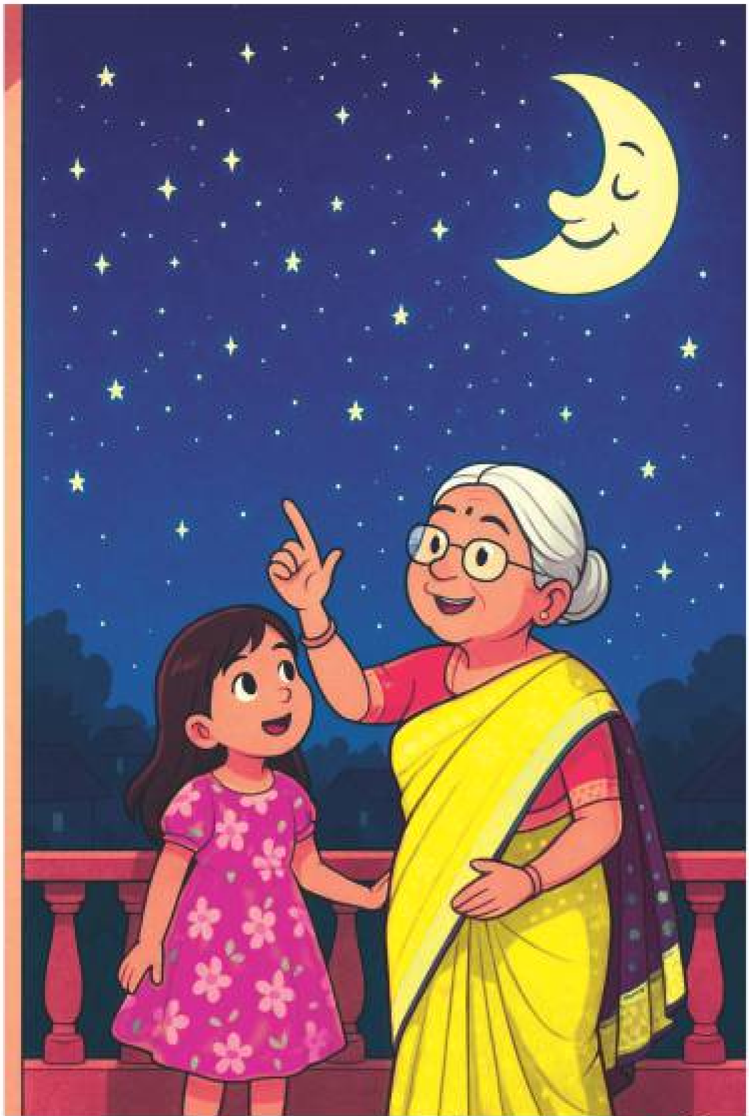

अगर न होते सूरज दादा

अगर न होते सूरज दादा,
बच्चो! जरा सुनो, होता क्या।
होता चारों ओर अँधेरा,
कहीं न होता कभी सवेरा।
पशु, पक्षी, इंसान न होते,
खेत और खलिहान न होते।
हरियाले मैदान न होते,
फूल, पेड़, उद्यान न होते।
होता चाँद नहीं चमकीला,
और न सागर दिखता नीला।
धरती सारी होती बंजर,
होते केवल कंकड़-पत्थर।
सूरज ही है जीवन-दाता,
इसीलिए हम सबको भाता।।

जादू के खेल

लड़की बन जाती है बिल्ली
गायब हो जाती है रेल
निकल कान से उड़े कबूतर
ये देखो जादू के खेल।

मीनार बनाएँगे

कहते हैं वैज्ञानिक ऐसी
अब मीनार बनाएँगे।
जिस पर चढ़कर बिना यान ही,
लोग चाँद पर जाएँगे।
हम भी जाएँगे चंदा पर,
मगर लौटकर आएँगे।
अपना प्यारा-सा घर अम्मां!
हम तो यहीं बनाएँगे।

कद्दू की बारात

कद्दू जी की चली बरात,
हुई बताशों की बरसात!
बैंगन की गाड़ी के ऊपर,
बैठे कद्दू राजा।
शलजम और प्याज ने मिलकर,
खूब बजाया बाजा!
मैथी, पालक, भिंडी, तोरी
टिंडा, मूली, गाजर,
बने बराती नाच रहे थे
आलू, मटर, टमाटर!
कद्दू जी हँसते-मुस्काते
लौकी दुल्हन लाए।
कटहल और करेले जी ने,
चाट पकौड़े खाए!
प्रात: पता चली यह बात,
सपना देखा था यह रात!

फूटा मटका

अभी खबर लंदन से आई,
मक्खी रानी उसको लाई!
भुनगे ने हाथी को मारा,
हाथी क्या करता बेचारा!
घुस बैठा मटके के अंदर,
मटके में थे ढाई बंदर!
उन्हें देखकर हाथी रोया,
रोते-रोते ही वह सोया!
रुकी न पर आँसू की धारा,
मटका बना समंदर खारा!
लगे डूबने हाथी बंदर,
तब तक आया एक कलंदर!
पर वह उनको पकड़ न पाया,
उसने फौरन ढोल बजाया!

उसको सुनकर आया मच्छर,
उसने लात जमाई कसकर!
फूटा मटका, बहा समंदर,
निकल पड़े सब हाथी बंदर!

नाचा छम-छम

चलो, चलेंगे चिड़िया घर,
उसमें है ऐसा बंदर।
सबसे हाथ मिलाता है,
मूंगफली ले खाता है।
मूंगफली के दो दाने,
उस दिन जब निकले काने।
तब उसको गुस्सा आया,
उसने मुझको धमकाया।
तब मैं दो केले लाया,
उनको खा वह मुसकाया।
दी शाबाशी, धम-धम-धम,
नाच उठा वह छम-छम-छम।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

एक बच्चा गुम हो गया था। पुलिस के हाथ वह लग गया। पुलिस ने उससे पूछा– ''तुम्हारे माता-पिता का नाम क्या है?''

'विश्व सुंदरी' बच्चे ने उत्तर दिया। पुलिस इंस्पेक्टर ने कहा– ''बेटे! ऐसे नहीं बोलते। माता-पिता की इज्जत करते हैं।''

बच्चा– मुझे क्षमा कर दो काका! मेरे पिताजी का नाम 'विश्व' है और माँ का नाम 'सुंदरी'।

*****

''आपको मेरे कुत्ते से डरने की आवश्यकता नहीं।'' मेहमान से गृहिणी ने कहा– ''आपने तो सुना ही होगा कि भौंकने वाले काटते नहीं।''

''यह कहावत हम लोग जानते हैं पर इसकी क्या गारन्टी है कि यह कुत्ता भी जानता हो।''

*****

लड़का (हाँफते हुए) सिपाही से– जल्दी चलो, एक आदमी एक घंटे से मेरे पिताजी से झगड़ रहा है।

सिपाही– फिर तुम इतनी देर से क्यों आए?

लड़का– अभी कुछ देर पहले तक तो मेरे पिताजी ही उसे पीट रहे थे। लेकिन अब मामला उल्टा हो गया है।

जानलेवा शौक

– पवित्रा अग्रवाल

शहर में बाइक रेसर्स का आतंक छाया हुआ था, रोज ही कहीं न कहीं कोई दुर्घटना हो रही थी और कोई न कोई घायल हो रहा था। रेसर्स को तो जान का खतरा था ही राह चलते लोग भी इनका शिकार हो रहे थे, टक्कर मार कर वे भाग जाते थे।

कभी–कभी रोड साइड सी. सी. टीवी कैमरों की सहायता से टक्कर मारने वालों की पहचान हो जाती थी, पकड़ में भी आ जाते थे पर ये अधिकांश वे बच्चे होते थे जिनका अभी लाइसेंस भी नहीं बना था या लाइसेंस होता भी था तो गलत पता और झूठी जानकारी देकर बनवाया गया होता था जिसमें उनके घरवालों ने सहायता की थी।

पुलिस को ऐसे अड्डों की तलाश थी जहाँ यह सब सामूहिक रूप से प्रैक्टिस करते थे। एक दिन ऐसी ही किसी सूचना पर पुलिस ने जाल बिछाया था।

सामने से पुलिस को आता देखकर कुछ लड़कों ने चिल्लाकर अपने साथियों को सावधान करते हुए कहा– ''भागो–भागो पुलिस''।

पर पुलिस ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था और कहा– ''कोई भी भागने का प्रयास न करे, हमने चारों ओर से घेरा हुआ है। अपनी–अपनी बाइक वहीं छोड़ कर सब लड़के यहाँ इकट्ठे हो जाएँ।''

पुलिस इंस्पेक्टर ने अपने साथ आए कांस्टेबल से कहा–

''राघव तुम गिनकर बताओ कि कुल कितनी बाइक हैं और रमेश तुम गिनती करके बताओ कि कुल कितने लड़के हैं?''

''जी सर! १३ बाइक हैं और ३२ लड़के हैं।''

''सब के लाइसेंस चेक करो और नाम, आयु, शाला, कॉलेज के नाम, कक्षा, घर का पता, मोबाइल और फोन नं. पूरा डिटेल में चेक करके नोट करो। साथ ही घर वालों को फोन करके पुलिस स्टेशन आने को कहो।''

''जी सर! वही कर कर रहे हैं।''

पुलिस इंस्पेक्टर ने बच्चों से पूछा– ''क्या तुम सब एक ही कॉलेज या एक ही लोकलिटी के हो?''

''नहीं सर!''

''क्या तुम लोग आपस में मित्र हो?''

''नहीं सर! हम सबको जानते भी नहीं है।''

''फिर इतनी बड़ी संख्या में यहाँ एक–साथ कैसे इकट्ठे हुए?''

''सर! सोशल नेटवर्क, फेसबुक, व्हाट्सअप के माध्यम से एक–दूसरे से संपर्क करके एक समय और स्थान तय करके हम सब यहाँ एकत्रित हुए हैं।''

''क्या तुम्हारे घर वाले जानते हैं कि तुम लोग बाइक लेकर यहाँ आए हो?''

''नहीं सर! उन्हें कुछ नहीं ज्ञात। हम लोग मित्र के घर जाने, सिनेमा जाने आदि की बात कहकर यहाँ आए हैं।''

''घर पर सच क्यों नहीं बताया?''

''सच बताते तो हमें यहाँ आने की अनुमति नहीं मिलती और हो सकता है हमारी बाइक की चाबी ले ली जाती।''

''सर! इन बच्चों की आयु १३ से २० वर्ष है और लाइसेंस कुल पाँच बच्चों के पास है और हेलमेट भी बस पाँच के पास ही है।''

''बच्चो! तुम जानते हो, तुम क्या कर रहे हो? अभी बाइक दौड़ाओगे फिर इस पर स्टंट करोगे। तुम्हारे लिए तो यह एक मजा है पर तुम्हारे स्वयं के और दूसरों के लिए यह जानलेवा भी हो सकता है।''

''छोड़ो राघव! अभी तो इन सबके घर फोन करो।''

''सर! इस में से चार बच्चे तो दूसरे नगर से

यहाँ पढ़ने के लिए आए हुए हैं, यहाँ उनका घर नहीं है, हॉस्टल में रहते हैं।''

''कोई बात नहीं, उनके घर भी फोन लगाओ, उन्हें भी पता तो चले कि जिन पर अपनी मेहनत की कमाई लुटा रहे हैं वह यहाँ मौज–मस्ती में लगे हैं।''

''हाँ सर! फोन तो लगभग सभी को कर दिया है, लोकल लोग तो आते ही होंगे।''

''यह भी चेक करो कि कितने बच्चे दोबारा पकड़े गए हैं।''

''हाँ सर! थाने चलकर यह भी चेक कर लेंगे।''

''सर! पिछली बार तो किसी के विरुद्ध केस पंजीकृत नहीं किया था... बच्चों और पैरेन्ट्स की काउन्सलिंग के बाद चेतावनी देकर छोड़ दिया था... इस बार?''

''इस बार जो बच्चे बिना लाइसेंस के गाड़ी लेकर आए हैं, उन्हें नहीं पहले उनके माता–पिता पर केस बनाएँगे। तभी इन पर लगाम कसी जा सकेगी और गाड़ियाँ भी जब्त कर लेंगे।''

''जी सर! वैसे भी समाचार–पत्रों और कई माध्यमों से हम यह संदेश जनता तक पहुँचाते रहते हैं कि कम आयु के बच्चे गाड़ी या बाइक चलाते हुए पकड़े गए तो माता–पिता के विरुद्ध केस पंजीकृत किया जाएगा फिर भी समझ नहीं आती... पता नहीं कैसे माता–पिता हैं।''

''हाँ सर! देशभर में नाबालिगों द्वारा कार, बाइक चलाने से दुर्घटनाएँ बहुत बढ़ गई हैं, स्वयं मरते हैं, दूसरों को मारते हैं। लोगों के लिए खतरा बन गए हैं पर घर वालों द्वारा कोई लगाम नहीं कसी जा रही। दो दिन पहले अपने ही नगर में जो ऐसा ही एक हादसा हुआ था उसमें बाइक चलाने वाला और जिसको टक्कर मारी है वह दोनों ही अस्पताल में मृत्यु से लड़ रहे हैं और एक जानकारी यह भी मिली कि उसकी आयु और पता गलत बताकर घर वालों ने लाइसेंस बनवाने में उनकी सहायता भी की है पर इन्हें क्या?''

''सर! कुछ बच्चे तो बहुत पैसे वाले घरों के हैं... दो के पिता तो अरब देशों में अकेले रहकर काम कर रहे हैं.. खूब पैसा भेजते होंगे.. उन्हें ये बच्चे महँगे शौकों पर लुटा रहे हैं और पकड़े जाने पर गलत तरीकों से बचाने में लग जाएँगे।''

कुछ बच्चे रो रहे थे, हाथ जोड़ रहे थे, पैर छूकर देने को गिड़गिड़ा रहे थे और आगे से यह गलती दोबारा न करने की कसमें खा रहे थे।

कुछ ने कहा– ''हमारे पास तो बाइक भी नहीं है और चलाना भी नहीं आता, मित्र के साथ ऐसे ही घूमने आ गए थे। कुछ भगवान! को याद करते हुए कह रहे थे– हे भगवान इस बार बचा ले, आगे से ऐसा कुछ नहीं करेंगे।''

उन सबको अनदेखा कर पुलिस इंसपेक्टर ने अपने साथियों से कहा– ''अभी तो इन सबको थाने ले चलो वहाँ सबसे निबटेंगे।''

– बेंगलुरू (कर्नाटक)

अनोखा है घोड़ा

– हरीशचंद्र पांडे

सोनू अपने दादाजी के साथ शाम की सैर कर रहा था। तभी कुछ पुलिस के जवान घोड़े पर बैठकर जाते हुए दिखाई दिए। ''दादाजी यह देखो घोड़ा।'' सात वर्ष का सोनू जोर से बोला। सैर से वापस आकर उसने दादाजी को अपनी पाठ्य पुस्तक दिखाई– ''यह देखो इसमें कितना अच्छा घोड़े का चित्र है।''

''हाँ–हाँ! सोनू बेटा घोड़ा एक तेज और ताकतवर जानवर है। यह आसानी से लंबी दूरी तक दौड़ सकता है।''

''अच्छा दादाजी! तो आप मुझे घोड़े के बारे में कुछ बताओ ना।'' ठीक है सोनू– ''हमारी दुनिया जब सभ्य हुई तो सबसे अधिक काम घोड़े ने किया। यदि हम इतिहास पर दृष्टि डालें, तो आपको पता चलेगा कि उनकी वफादारी के कारण उन्होंने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा, उन्होंने अपने स्वामियों की सहायता भी की और उन्हें बचाया। उदाहरण के लिए चेतक एक प्रसिद्ध घोड़ा था।''

'' यह महाराणा प्रताप जी का घोड़ा था।'' सोनू ने चट से जवाब दिया।

शाबाश सोनू! ''इसके अलावा, राणा सांगा के अनोखे और तेज भागने वाले घोड़े का नाम बड़गड़ा था।''

''रानी लक्ष्मीबाई के पास तीन घोड़े थे। एक का नाम था सारंगी, दूसरे का पवन और तीसरे का नाम था बादल। कहते हैं रानी लक्ष्मीबाई अपने घोड़े पर बैठकर किले की १०० फीट ऊँची दीवार को पार कर गईं थी। कहा जाता है कि वह घोड़ा बादल था। इस तथ्य से पता लगाया जा सकता है उनका घोड़ा कितना बहादुर था।''

वीर शिवाजी के पास भी योद्धा जैसे घोड़े थे। और उनके पास एक नहीं बल्कि सात घोड़े थे। उनके नाम थे मोती, विश्वास, रणवीर, गजरा, कृष्णा, तुरंगी और इंद्रायणी। कहते हैं वीर शिवाजी के अंतिम दिनों में कृष्णा उनके साथ था। यह सफेद रंग का स्टेलियन नस्ल का घोड़ा था। यह घोड़ा तेज रफ्तार के साथ ऊँची भूमि पर चढ़ने में भी सक्षम माना जाता है।

घोड़ा शाकाहारी और पालतू जानवर है। यह बहुत समझदार भी होता है। घोड़े के चार पैर, दो आँखें, एक नाक, दो कान और एक पूँछ होती है। उनके पैर काफी पतले लेकिन ताकतवर होते हैं। यह उन्हें तेज और लंबे समय तक दौड़ने में सहायता करता है। इसके अलावा, घोड़े अलग-अलग आकार, रंग और आकृति में पाए जा सकते हैं। यह सब उनकी नस्ल और जीन पर निर्भर करता है।

इसके अलावा वे जो खाना खाते हैं उसकी गुणवत्ता और मात्रा भी उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। घोड़े कई रंगों में होते हैं। सफेद, लाल, भूरे, काले, भूरे रंग के घोड़े होते हैं और कभी-कभी उनमें कई रंगों का मिश्रण भी होता है। दुनिया के लगभग हर देश में घोड़े होते हैं। अरबी घोड़ा बहुत तेज दौड़ने के लिए लोकप्रिय है। घोड़ों को घास वाले क्षेत्रों या मैदानों में रहना पसंद है जहाँ वे घास, पत्ते और अन्य सभी प्रकार की वनस्पति खा सकते हैं। मनुष्य घोड़ों को अस्तबल में रखते हैं जो घोड़ों को रखने के लिए लकड़ी से बनी एक इमारत होती है।

मनुष्य घोड़ों का कई तरह से उपयोग करते हैं। उनमें से एक है जब वे यात्रा करते हैं या उनकी पीठ पर सवारी करते हैं। यदि हम अतीत को देखें, तो हम पाते हैं कि वे युद्धों में उपयोग किए गए थे। सैनिक युद्ध के मैदानों में लड़ने के लिए उन पर सवार होकर जाते थे। आधुनिक समय में, उनकी शानदार दौड़ने की क्षमता के कारण खेलों में उनका अधिक उपयोग होता है। वे घुड़सवारी, स्पोर्ट्स पोलो और अन्य खेलों में भी उपयोग आते हैं। दूसरी ओर, भारत में लोग गाड़ियाँ खींचने और खेतों में घोड़ों का उपयोग करते हैं। घोड़े के मरने के बाद हम उसकी हड्डियों, चमड़ी, बालों का उपयोग कालीन, दवा और चमड़े के दूसरे उत्पाद बनाने में भी करते हैं।

इस प्रकार ये मनुष्यों के बहुत काम आते हैं। घोड़े लंबे समय तक नहीं सोते, वे छोटी-छोटी झपकी लेना पसंद करते हैं। इसके अलावा, वे बैठते नहीं हैं। वे लगभग चार से पंद्रह घंटे तक खड़े रहते हैं। अपनी शारीरिक संरचना के कारण घोड़े बहुत से कामों के लिए उपयुक्त होते हैं।

मनोरंजन उद्योग में भी इनका उपयोग होता है। घोड़ों की कुछ नस्लें बहुत सुंदर और शांत होती हैं। उन्हें खेतों में पालतू जानवर के रूप में भी रखा जाता है।

संक्षेप में कहें तो घोड़ा हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है। हमें स्वार्थी कारणों से उनका शोषण करने के बजाय उनसे प्यार करना चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए। आखिरकार, उनका अस्तित्व मानव अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। घोड़े की एक मजेदार बात सुनो सोनू! घोड़े जन्म के कुछ समय बाद ही दौड़ना प्रारंभ कर देते हैं।

उनके शरीर में लगभग २०५ हड्डियाँ होती हैं। इसके अलावा, घोड़ों की आँखें जमीन पर रहने वाले किसी भी अन्य स्तनधारी की तुलना में बड़ी होती है। ''दादाजी! घोड़ा कभी माँस नहीं खाता और कितना ताकतवर होता है। हमको कभी भी माँस नहीं खाना चाहिए। यह हिंसा है है ना दादाजी ?''

दूसरे दिन सोनू ने दादाजी से प्राप्त जानकारी अपने विद्यालय में जाकर सुनाई। अध्यापक महोदय ने सोनू की इस अद्भुत जानकारी पर ताली बजाकर उसका सम्मान किया।

- हलद्वानी (उत्तराखण्ड)

चमके बिजली

– नीना सिंह सोलंकी

धीरज का गाँव शहर से लगा हुआ था। उसका गाँव बहुत सुन्दर था। जिधर भी दृष्टि डालो हरियाली ही हरियाली दिखाई देती थी। उसके दादाजी इंजीनियर थे। वे सेवानिवृत्ति के बाद गाँव आकर बस गए थे। वे कई वर्षों से गाँव के सरपंच थे। गाँव वाले उन्हें हर बार सर्व सम्मति से सरपंच चुन लेते थे।

दादाजी ने गाँव का सर्वांगीण विकास किया था। वे पर्यावरण के प्रति बहुत जागरूक थे। उनके प्रयासों से गाँव में हर घर के आगे आम, नीम, बरगद व पीपल के वृक्ष लगे थे साथ में फूलों का सुन्दर बागीचा भी अधिकांश घरों में लगा था।

फूलों की महक से गाँव की हर गली महकती थी। धीरज और उसकी बहन अनाया दोनों नगर पढ़ने जाते थे उनकी बस सुबह सात बजे उन्हें लेने आ जाती थी। धीरज के पिताजी की गाँव में डेयरी थी। दूध नगर की दुकानों व घरों में जाता था। धीरज की माँ का हाथ बटाने जग्गो ताई आती थीं। जो घर की साफ–सफाई और खाना बनाने में उनकी सहायता करती थीं। कभी–कभी उनके बच्चे उमेश और उमा भी उनके साथ आ जाते थे। वैसे भी उमेश और धीरज की आपस में बहुत जमती थी। उमेश और उमा गाँव की पाठशाला में पढ़ने जाते थे। संध्या के समय सारे बच्चे सामने वाले मैदान में खेलते थे।

''आज तो बहुत कीचड़ है खेल कैसे होगा?'' धीरज के मित्र सुमित ने उससे कहा।

''हाँ भाई! कई दिन से लगातार बारिश हो रही है। कितने दिनों से हमने क्रिकेट नहीं खेला है।'' धीरज ने कहा। धीरे–धीरे सारे मित्र एकत्र हो गए थे।

''आज वर्षा तो नहीं है पर मैदान तो अभी सूखा नहीं है। मेरे घर के आगे तो बहुत कीचड़ थी बड़ी कठिनाई से निकल कर आया हूँ।'' सोनू ने मुँह बनाया।

''वह तो होनी ही थी तेरा घर खेत पर जो बना है।'' धीरज ने मुस्कुराते हुए उसके गले में हाथ डाल दिए।

''पर मैं तो सोच रहा था कि आज तो हम मजे से क्रिकेट खेलेंगे।'' भानु ने हाथ को बल्ले की तरह घुमाते हुए कहा।

''भानु! तुम भी अक्ल के पीछे लठ्ठ लिए घूमते हो। कीचड़ सूखने में एक दो दिन तो लगते हैं न!'' धीरज ने कहा तो सारे मित्र खिलखिला कर हँस पड़े।

उमेश और उसकी बहन उमा दोनों भी पीछे खड़े सबकी बातें सुन रहे थे। तभी अनाया बाहर आकर उमा को अपने साथ खेलने के लिए अन्दर ले गई। अनाया जब भी धीरज व उसके मित्रों के साथ खेलती थी तो दोनों में अधिकांश झगड़ा हो जाता था। इसलिए वह अधिकतर उमा के साथ ही खेलती थी। दोनों को चित्रकारी की बहुत रुचि थी वे अपने चित्रों में रंग भरा करतीं या फिर पड़ोस की बानी और मोना के साथ सितौलिया खेलती थीं।

''अब तू ही बता उमेश की कौन–सा खेल खेलें?'' धीरज ने उमेश के पास जाकर कहा।

''ऐसे में तो हम अन्दर घर में बैठकर खेलने वाले खेल ही खेल सकते हैं भैया। कल तक कीचड़ सूख जाएगी। तब हम क्रिकेट खेलेंगे।'' यूँ तो धीरज और उमेश की आयु में अधिक अंतर नहीं था पर वह उसे भैया ही कहता था।

सारे मित्र धीरज के घर के अन्दर आ गए। सामने के वरांडे में अनाया और उमा अपना चित्रकारी का सामान फैलाए हुए बैठी थीं। धीरज ने कैरम निकाल ली। बस फिर तो खेल प्रारंभ हो गया।

''अरे भाई! ये बताओ कि तुम लड़के–लड़कियाँ एक साथ क्यों नहीं खेलते? खेल तो

सबको मिलकर खेलना चाहिए।'' दादाजी कमरे से बाहर आकर बोले।

''दादाजी! कैरम तो चार से अधिक खिलाड़ी एक बार में नहीं खेल सकते।'' धीरज ने बहाना बनाया।

''मैं आज की बात नहीं कर रहा हूँ तुम लड़के–लड़कियाँ हमेशा ही अलग–अलग खेलते हो।'' दादाजी ने फिर साथ खेलने पर जोर दिया।

''ठीक है दादाजी! आगे से हम सब साथ में ही खेलेंगे।'' धीरज ने अनाया की तरफ देखते हुए कहा। जो आश्चर्य से उसकी ओर देख रही थी।

कैरम की बाजी काफी देर तक चलती रही। जब दिन ढल गया तो सब अपने–अपने घर जाने लगे। उमेश और उमा भी अपने घर चले गए। रात में फिर बहुत तेज वर्षा हुई। वर्षा के साथ बिजली भी बहुत तेज कड़क रही थी। अनाया तो डर कर अपनी माँ से चिपक गई। तभी लगा, जैसे कि बहुत तेज बम फूटा हो। धीरज भी दौड़कर दादाजी के पास पहुँच गया।

''दादाजी! लगता है कहीं बिजली गिरी है।'' वह दादाजी का हाथ पकड़कर बोला।

''हाँ बेटा शायद हमारे गाँव में ही गिरी है। मुझे देखना होगा।'' वह उठकर बाहर जाने लगे। तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। दादाजी उठकर बाहर निकल गए।

''साहब! रामसिंह के बाड़े पर बिजली गिर गई है।'' उस आगंतुक ने कहा। जो धीरज ने सुन लिया।

रामसिंह तो उमेश के पिताजी का नाम है। वह घबरा गया। उसे उमेश और उमा की चिंता होने लगी।

''सब सुरक्षित तो हैं न?'' दादाजी भी उमेश के परिवार के लिए चिंतित थे।

''अभी कुछ नहीं पता साहब! वहाँ जाकर ही पता चलेगा।''

''दादाजी! मैं भी चलूँ?'' पीछे से वह बोला।

''नहीं बेटा! मैं ही जाऊँगा।'' दादाजी ने कहा तो वह निराश हो गया। तब तक और भी कई गाँव वाले आ चुके थे। सब उमेश के घर की ओर चल दिए। वह बिस्तर पर लेट तो गया पर नींद नहीं आई। वह जानना चाहता था कि क्या हुआ है? वह जग्गो ताई, उमेश, उमा व उनके पिता की सुरक्षा लेकर वह सोच रहा था। पर बिजली तो बाड़े पर गिरी है। वहाँ तो उसकी भैंस और बकरी रहती हैं। वह प्रार्थना करने लगा कि सब ठीक हो।

थोड़ी देर में ही दादाजी लौट आए। उन्होंने बताया कि बिजली एक वृक्ष पर गिरी। बस वही जल गया। किसी को नुकसान नहीं हुआ है। उसने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि सब सुरक्षित हैं। पर एकदम उसे वृक्ष का ध्यान आया।

''दादाजी! उमेश के बाड़े के पास जो बरगद का वृक्ष है क्या उस पर बिजली गिरी है?'' धीरज ने दादाजी से पूछा।

''हाँ बेटा! उसी पर गिरी है।''

''ओह! कितनी बड़ा बरगद था। हम उसकी डाल पकड़ कर झूलते थे।'' धीरज बहुत दुखी हो गया।

''हाँ बेटा! मुझे भी बहुत दुःख है बरगद का, पर ये भी तो सोचो कि कोई जान नहीं गई। उमेश की भैंस तो बाड़े के दूसरे छोर पर ही थी। वह बच गई ये बहुत अच्छी बात हुई।''

''हाँ, वह तो है।''

''दादाजी! ये आकाशीय बिजली कैसे गिरती है?'' धीरज ने बिजली गिरने के विषय में कहीं पढ़ा तो था पर वह अपने दादाजी से जानना चाहता था।

''अभी सो जाओ सुबह इस विषय में बाद करेंगे।'' दादाजी ने उसके सिर पर हाथ फेरा।

''दादाजी! नींद नहीं आ रही है। अभी बताइए न।'' धीरज ने मनुहार की।

''चलो फिर सुनो। बरसात के दिनों में जब आकाश में बादल घने होते हैं हवा के कारण वे आपस में टकराते हैं इस घर्षण से विद्युत आवेश उत्पन्न होता है। कुछ बादल ऋणात्मक तो कुछ धनात्मक विद्युत आवेश ग्रहण कर जब आपस में मिलते हैं तो तेज चमकदार आकाशीय बिजली उत्पन्न होती है इसका वोल्टेज एक अनुमान के अनुसार तीस करोड़ वोल्ट हो सकता है। इतनी तीव्र विद्युत ऊर्जा जब धरती पर गिरती है तो पलभर में बड़ी हानि कर देती है। जैसे वह बरगद का पेड़ पूरा नष्ट हो गया।''

''तभी तो ये इतनी खतरनाक होती है।'' धीरज ने आँखें फैलाकर कहा।

''चलो अब सो जाते हैं सुबह, तुम्हें उमेश और उमा से भी तो मिलना है।'' दादाजी ने खड़े होते हुए कहा धीरज ने दादाजी का हाथ पकड़ लिया।

– भोपाल (म. प्र.)

भूल सुधार

प्रिय पाठको! जून २०२५ के अंक में प्रकाशित बाल कहानी 'जादुई गुड़िया' की लेखिका विमला नागला (केकड़ी, राजस्थान) हैं। तकनीकि कारण से भ्रम वश मूल लेखिका के स्थान पर श्री. यशपाल शर्मा 'यशस्वी' जी का नाम प्रकाशित हो गया है। त्रुटि के लिए खेद है।

– सम्पादक

बादल फटते क्यों हैं?

– सावित्री शर्मा 'सवि'

रजत के पिताजी टी. वी. पर तन्मय होकर समाचार सुन रहे थे कि उन्होंने रजत की माँ को आवाज दी– ''मीनू जल्दी से मेरा फोन लाना, उत्तरकाशी के पास धरासू में बादल फटने की सूचना आई है। घर पर फोन कर लेते है, सब ठीक तो है।''

रजत की माँ ने जल्दी से फोन लाकर दिया। वही पास में छः–सात वर्ष का रजत कलर बुक में कलर कर रहा था। उसका ध्यान अपने पिताजी की बात पर गया। उसने बाल सुलभ जिज्ञासा से पूछा– ''पिताजी! बादल फटना क्या होता है?''

''बेटा! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। आओ यहाँ आकर मेरे पास बैठो। मैं तुम्हें विस्तार से बताता हूँ।'' रजत पास आकर पिताजी के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया।

''लीजिए मैं आ गया, अब बताइए पिताजी!''

पिताजी ने रजत को समझाना शुरु किया– ''बेटा! बादल फटना एक तकनीकी शब्द है। जिसका प्रयोग मौसम वैज्ञानिक करते हैं। इसका अर्थ है अचानक से एक स्थान पर बहुत सारी वर्षा होना। आय.आय.एम.डी. के अनुसार यदि एक स्थान पर एक घंटे में १०० मिली मीटर वर्षा होती है तो इस प्रक्रिया को बादल फटना कहते हैं। ये ठीक उसी प्रकार होता है जैसे पानी का गुब्बारा फूट जाए तो अचानक से सारा पानी एक स्थान पर गिर जाएगा। इस घटना को क्लाउड बस्ट कहते हैं।''

''पर पिताजी ये फटते क्यों हैं बादल?''

''अच्छा लग रहा है तुम प्रश्न पूछ रहे हो, प्रश्न करने से नई जानकारी मिलती है, कोई भी प्रश्न मन में आए पूछना अवश्य चाहिए। तो सुनो अभी मैंने बताया कि बादल फटना किसे कहते हैं? अब ये होता क्यों है? ये भी समझो। जब एक स्थान बहुत अधिक नमी वाले बादल एक ही स्थान पर एकत्र हो जाते हैं तो वहाँ उपस्थित पानी की बूँदें आपस में मिलती है इसके भार से बहुत तेज वर्षा शुरु हो जाती है। अधिकांश ये घटनाएँ पहाड़ों पर घटती है। इसका कारण है कि पानी से भरे बादल हवा के साथ उड़ते हैं ऐसे में कई बार वो पहाड़ों के बीच फँस जाते हैं और ये बादल पानी में परिवर्तित हो जाते हैं तथा एक ही स्थान पर बरसने लगते हैं। इस कारण तेज वर्षा प्रारंभ हो जाती है। बादल फटना वर्षा का चरम रूप है। इस घटना में वर्षा के साथ कभी–कभी गरज के साथ ओले भी पड़ते हैं।

सामान्यतया बादल फटने के कारण केवल कुछ मिनिट तक मूसलाधार वर्षा होती है।

''पिताजी! इसे कितना अजीब लगता होगा ना इतनी वर्षा का एक साथ होगा।''

''हाँ बेटा! ऐसी वर्षा से कभी–कभी बाढ़ की–सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ये प्रक्रिया पृथ्वी से लगभग १५ किलोमीटर की ऊँचाई पर घटती है।''

''पिताजी! ये मैदानी क्षेत्रों में बादल अधिक फटते हैं या पहाड़ी क्षेत्रों में?''

''बेटा! पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक प्रभाव होता है। क्योंकि बादल काफी मात्रा में पानी आसमान में लेकर चलते हैं। जब उनके रास्ते में कोई बड़ी बाधा आती है तब उनसे टकराकर ये अचानक फट जाते हैं।''

आज पिताजी से नई जानकारी लेकर रजत बहुत प्रसन्न था। सोच रहा था कल शाला में जाकर अपने मित्रों को बताएगा।

– देहरादून (उत्तराखण्ड)

कहानी अपने चन्दा मामा की

– रामगोपाल राही

पूर्णिमा की रात चमक रही चाँदनी में धरती का कोना-कोना दमक रहा था। चौक में छोटे-छोटे बच्चे खेलते चाँद को देख-देख चन्दा मामा, चन्दा मामा, चन्दा मामा गुनगुना रहे थे।

बच्चों के मुँह से अपने बारे में चन्दा मामा, चन्दा मामा दूर के पुए पकाए बूर के, चन्दा मामा दूर के, सुन चाँद मुस्कुराया। सोचने लगा बच्चे मन के सच्चे होते हैं। निष्कपट होते हैं निर्मल भावनाओं के होते हैं बच्चों की बात तो भगवान भी सुनते आए हैं। बच्चों की पुकार पर तो भगवान भी प्रकट हो जाते हैं। कुछ ऐसा ही विचार कर चन्दा प्रसन्न हो बच्चों के बीच आकर बोला– ''क्या गुन गुना रहे हो बच्चो?'' बच्चे तो अपनी धुन में बोलते रहे चन्दा मामा दूर के पुए पकाए बूर के, चन्दा मामा दूर के।

चमक रहे, दमक रहे चाँद की आभा को देख चाँदी-सी चमकती चाँदनी में अदृश्य आवाज सुन कुछ बच्चे बोले– ''कौन हो तुम दिखाई भी नहीं दे रहे?''

इस पर चन्द्रमा मानवस्वरूप में चमकता, दमकता, चमकती चाँदी-सी चाँदनी की किरणों के साथ चाँद पास में ही आ खड़ा हुआ। बोला– ''मैं चन्द्रमा हूँ।''

उधर कुछ बच्चे अपनी धुन में बोलते रहे– ''चन्दा मामा दूर के, पुए पकाए बूर के, चन्दा मामा दूर के।''

बच्चों की मीठी प्यारी बोली सुन चाँद बोला– ''हाँ मैं दूर हूँ प्यारे बच्चो!'' चाँद ने फिर कहा– ''मैं दूर क्यों हूँ, बताऊँ आप लोगों को? बालको! मेरी कहानी सुनोगे तो मेरे बारे में सभी बातें समझ जाओगे।''

कहानी की बात सुन बच्चे बोले– ''कहानी तो अवश्य सुनेंगे।''

चाँद बोला– ''मेरी कहानी बहुत लम्बी है।''

बच्चों ने बड़े चाव से कहा– ''कहानी लम्बी है, तो भी सुनेंगे चन्दा मामा!''

चाँद बोलने ही वाला था, पर इससे पहले बच्चों ने ही चाँद से पूछ लिया– ''चन्दा मामा! आपका जन्म कब हुआ?''

बच्चों की बात सुन चाँद थोड़ा सकपका गया। बोला– ''यह बात बता पाना तो मेरे लिए भी संभव नहीं कि कितने समय पूर्व मेरा जन्म हुआ और मुझे जन्म देने वाली माँ कौन थी? पर मैं इतना अवश्य जानता हूँ, जब से मैं समझ पाया पृथ्वी की निरन्तर परिक्रमा करता रहा हूँ। मुझे लोग पृथ्वी का उपग्रह भी समझते हैं। पर क्या मैं सचमुच में पृथ्वी का उपग्रह हूँ?''

फिर कहा– ''मैं आकार में पृथ्वी के चौथाई भाग के बराबर हूँ, शायद इसी कारण से मुझे लोगों ने पृथ्वी का उपग्रह मान लिया।''

फिर कहा– ''खगोल शास्त्री मेरे बारे में तरह-तरह के अनुमान लगाते हैं, कुछ कहते हैं ब्रह्मांड में किसी स्थान पर पृथ्वी के निकट आ गया हूँ। उसी के आकर्षण पर उसकी परिक्रमा करने लगा हूँ। कुछ खगोलविद् कहते हैं मेरा जन्म धरती की कोख से हुआ है। धरती मेरी माँ मैं धरती की संतान हूँ। कुछ और खगोलविद् मानते हैं धरती और मेरी उत्पत्ति कास्मिक गोले से एक साथ हुई। मेरा जन्म कैस हुआ इस बारे में जो भी है मैं स्वयं अनजान हूँ।''

चाँद ने अपनी बात जारी रखते हुए फिर कहा– ''ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मुझे चन्द्रमा को ग्रह और देव दोनों में माना गया है।'' आगे कहा– ''मेरी उत्पत्ति के बारे में कई पौराणिक धार्मिक कथाएँ हैं। ज्योतिष के अनुसार मुझे चन्द्रमा को महर्षि अत्रि और देवी अनसूया का पुत्र माना गया है। मेरे (चन्द्रमा के)

बारे में मत्स्य पुराण पद्म पुराण अग्नि पुराण, स्कंद पुराण में कई पौराणिक कथाएँ हैं।

स्कंद पुराण के अनुसार देव, दानव युद्ध में सागर मंथन पर चौदह रत्न निकले थे, मैं चन्द्रमा उन्हीं में से एक हूँ। इस प्रकार मेरे बारे में कई पौराणिक, धार्मिक कथाएँ मिलती हैं।

बच्चो! अब वैज्ञानिक युग है इस युग में तर्क संगत सत्य, तथा अनुसंधान व शोध की बात मानी जाती है। अनुसंधान व शोध के अनुसार माना जाता है अरबों वर्ष पहले, एक बड़ा ग्रह पृथ्वी से टकरा गया था। इस टक्कर के फलस्वरूप चन्द्रमा का जन्म हुआ।

शोध के अनुसार ही एक और मत पृथ्वी सतह से २९०० किलोमीटर नीचे विखंडन के फल–स्वरूप पृथ्वी की धूल और पपड़ी अंतरिक्ष में उड़ी, इस मलबे ने एकत्र होकर चाँद को जन्म दिया।''

खगोलविदों की बताई गई बात पर ही बच्चे चाँद से पूछने लगे– ''चन्दा मामा! आपकी आयु कितनी है?''

चाँद बोला– ''मेरी आयु लगभग चार खरब साठ अरब वर्ष पुरानी समझी जाती है। यह भी कहा जाता है कि मेरी आयु उतनी ही है जितनी पृथ्वी की।''

नभ में चाँद को देख रहे बालकों से चाँद बोला– ''बालको! जब से पृथ्वी है तभी से चमक रहा हूँ। आप लोग मुझे चन्दा मामा कहकर पुकारते हो, रात को जब मुझे देखते हो आपके होठों पर मुस्कान आ जाती है। मुझे देखकर बहुत प्रसन्न होते हो।''

फिर कहा– ''बालको! मैं पृथ्वी की परिक्रमा करता हूँ।''

चाँद की यह बात सुन बच्चों ने पूछा– ''चन्दा मामा! आप पृथ्वी की परिक्रमा कितने दिन में कर लेते हो?''

बालकों की बात सुन चाँद बोला– ''मुझे पृथ्वी

की परिक्रमा करने में लगभग २७ दिन ७ घंटे का समय लगता है।''

चाँद ने फिर अपनी कहानी बताते हुए कहा– '' बालको! मुझ पर कोई वातावरण नहीं है, इसलिए जो भी मेरे यहाँ आते हैं, उन आने वालों को भी आपस में एक–दूसरे की आवाज सुनाई नहीं देती।''

फिर कहा– ''मेरे यहाँ पानी भी नहीं है। आने वाले पानी खोजते हैं, कुछ पानी मिलने का दावा भी करते रहे हैं।''

चाँद बोला– ''मैं यहाँ से सारे संसार के लोगों को देखता रहता हूँ।''

चाँद फिर मुस्कुराते हुए बोला– ''जिज्ञासु बालको! पूर्णिमा को मेरी सुंदरता बहुत ही अद्भुत होती है। उस दिन मैं चाँदनी के साथ संसार की सैर करने निकलता हूँ। मेरी अद्भुत चाँदनी का भी अद्भुत रहस्य है।'' फिर कहा– ''मुझमें अपना प्रकाश नहीं है और न ही उष्णता, सूर्य की जो किरणें मेरे पिछले भाग पर पड़ती है, वही मेरी चाँदनी होती है। मैं धरती पर आ नहीं सकता, चाँदनी को भेज देता हूँ।''

चाँद की बातें सुन बच्चे मुस्कुराने लगे। चाँद ने फिर कहा– ''बालको! अमावस के दिन मैं छुट्टी पर रहता हूँ।'' हँसते हुए बोला– ''बहुत विश्राम करता हूँ।'' छुट्टी की बात सुन बालक भी हँसने लगे। फिर

आपस में बतियाने लगे– ''अरे! चन्दा मामा भी छुट्टी पर रहते हैं।''

नभ में चाँद विचरण करता रहा। बच्चे यह भी देखते रहे। नभ में विचरण कर रहे हैं चाँद के बारे में बच्चों के संग खड़ा हुआ वार्तालाप कर रहा चाँद फिर बोला– ''बालको! आकाश में विचरण करते हुए मैं अपने इस रूप में सभी पृथ्वीवासियों का मन मोह लिया करता हूँ। मुझे अपनी कथाओं के अनुसार मन, माँ और सुंदरता का कारण समझा जाता है।''

चन्द्रमा बोला– ''बालको! मैं सबका दुलारा हूँ। मुझे नित्य नए रूप में आना अच्छा लगता है। छोटे से बड़ा होता हूँ, फिर बड़े से छोटा होता हूँ। धरती पर रहने वाली मेरी बहनें अपने शिशुओं को मुझे दिखा मेरा परिचय देती हैं, अँगुली से मुझे दिखाते हुए गाने लगती हैं– 'चन्दा मामा! आजा, दूध भात खा जा' सुन मैं धन्य हो जाता हूँ। चन्द्रमा ने फिर अपने बारे में बताया मैं आसमान में तारों के बीच बहुत प्रसन्न हूँ। पृथ्वी पर आप लोग मुझे देख बहुत प्रसन्न होते हैं। कई महत्वपूर्ण तिथियों पर मुझे देखने के लिए भारतवासी स्त्री–पुरुष मेरे निकलने की प्रतीक्षा करते हैं।

धरती पर पूर्णिमा और अमावस्या बारी–बारी से आती है। मेरे ही आकर्षण के कारण समुद्र में ज्वार–भाटा आता है। परिक्रमा करते–करते कभी–कभी अमावस्या को सूर्य तथा पृथ्वी के बीच मैं आ जाता हूँ सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचने से रुक जाती है। ऐसे में पृथ्वी पर सूर्य का कुछ अंश अथवा कभी–कभी पूरा सूर्य दिखाई नहीं देता। अर्थात् सूर्य ग्रहण होता है। चन्द्रमा की बात सुन जिज्ञासु बालक बोले– ''चन्दा मामा! चन्द्र ग्रहण कब और क्यों होता है?''

बच्चों की बात सुन चन्दा मामा मुस्कुराया और चन्द्र ग्रहण होने का कारण बताने लगा। कहा– ''किसी पूर्णिमा तिथि को पृथ्वी, चन्द्रमा और सूर्य के बीच आ जाती है तब पृथ्वी की विशाल छाया से मैं दब जाता हूँ ऐसे में मैं कुछ समय के लिए पृथ्वीवासियों को दिखाई नहीं देता।

बच्चों की जिज्ञासा देख, इसके बाद चन्दा मामा ने बड़े रहस्य की बात बताई– ''बालको! मेरे यहाँ पृथ्वी की तरह मेरे चारों ओर विभिन्न गैसों से बना हुआ कोई सुरक्षात्मक कवच नहीं है। इसलिए दिन के समय मेरा तापमान अत्यधिक हो जाता है। मैं बहुत गर्म हो जाता हूँ। रात के समय बहुत सर्दी रहती है मेरे पृष्ठ प्रदेश पर तापमान १५६ सेल्सियस तक कम हो जाता है। इस कारण मेरे यहाँ कोई भी जीवधारी नहीं रहता और न ही कोई वनस्पति पैदा होती।''

अब फिर बच्चे बोलने लगे– ''चन्दा मामा! आप में काले–काले धब्बे क्यों दिखाई देते हैं?'' दूसरा बालक बोला– ''बुढ़िया चरखा कातती हुए भी दिखाई देती है चन्दा मामा।'' इस पर चन्दा मामा ने कहा– ''मेरे गन में कोई बुढ़िया नहीं कोई काले धब्बे नहीं। सच्चाई यह है बालको! मेरे पर उल्काओं की वृष्टि होती रहती है। इससे गड्ढे हो जाते हैं, जो आपको काले–काले दाग नजर आते हैं।''

इन सभी के चलते चन्दा बोला– ''एक दिन अचानक मेरे जीवन में घटना घटी। वह दिन २१ जुलाई १९६९ का था। इस दिन पृथ्वी से भेजा गया अपोलो ११ नामक यान मेरे यहाँ उतरा में अचम्भे के साथ देखता रहा। यान में से दो मानव निकले। नील आर्मस्ट्राँग बज एल्ड्रिन। फिर यहाँ आने का प्रचलन चला और यान आते–जाते रहे।''

चन्दा मामा बोला– ''मुझ पर मानव की चहल–कदमी से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मानव के पग मेरे धरातल पर पड़ने लगे हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब मेरी और आपके बीच की दूरियाँ मिए जाएँगी। अच्छा बच्चो! चलता हूँ।''

बच्चे चन्दा के मुँह से चन्दा की कहानी सुन बहुत प्रसन्न हुए।

– बूँदी (राजस्थान)

बीमारी
चित्रकथा-
ज़मींदार शिवप्रसाद बेहद बीमार था. वैद्य को उसने बताया -
इस कमबख्त बीमारी में शारीरिक कमज़ोरी तो है ही, मैं मानसिक संतुलन भी खो बैठा हूं..
..जो कहना चाहता हूं कह नहीं पाता, जो नहीं कहना चाहिये, वह कह बैठता हूं..
निराश न होइये, मैं अपनी पूरी क्षमताएं लगाकर आपको ठीक कर दूंगा ...
वैद्य जी, अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं आपके चिकित्सालय को 50 हज़ार रू. दान दूंगा.
वैद्य का इलाज रंग लाया..
शिवप्रसाद कुछ दिनों में ठीक हो गया. तब वैद्य ने कहा -
आपको याद दिलाता हूं बीमारी से ठीक होने पर आपने मेरे चिकित्सालय में...
50 हज़ार रू. दान देने के लिए कहा था..
वैद्य जी, यही तो बीमारी थी कि शारीरिक कमज़ोरी के कारण मैं जो कहना चाहता था कह नहीं पाता था और जो नहीं कहना चाहिए वह कह बैठता था

सच्चा साथी

– विमला रस्तोगी

प्रखर और तन्मय दोनों एक ही शाला में पढ़ते थे। आठवीं कक्षा में थे। घर से शाला बहुत दूर नहीं थी। प्रखर अपनी साइकिल से जाता, कभी पैदल भी चला जाता। तन्मय को नई बढ़िया वाली साइकिल उसके पिताजी ने लाकर दी। वह भी उससे आता था। एक दिन दोनों साइकिल से शाला से लौट रहे थे। तन्मय बोला– ''आज ओ.टी.टी. पर एक नई फिल्म रिलीज हुई है। मेरे घर देखने आ जाना। तुम्हारे टी. वी. पर वह चैनल नहीं है।''

''हाँ! हमारे पिताजी ने नहीं ली। मुझे सिनेमा का इतना शौक नहीं है।'' प्रखर ने कहा।

''तू क्या करता रहता है घर पर?'' तन्मय ने पूछा।

''थोड़ा बहुत टी. वी. देखता हूँ, मुझे किताबों में रुचि है। मैं स्वाध्याय करता हूँ। हमारे घर में सभी को किताबें पढ़ने का शौक है।''

''तू मोबाइल पर गेम भी नहीं खेलता।''

''नहीं! मुझे मोबाइल की लत नहीं है। हमारी माँ 'मोबाइल नहीं, पुस्तक दो' अभियान को चला रही है।''

''वाह! कमाल है।'' तन्मय ने कहा। तब तक प्रखर का घर आ गया। वह घर चला गया। तन्मय का घर कुछ दूरी पर था।

तन्मय का जन्मदिन आ रहा था। उसने चार दिन पहले प्रखर और अन्य मित्रों को निमंत्रित कर दिया और कहा– ''इस बार मेरा जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है, तुम सबको आना है।'' कहते हुए तन्मय बड़ा प्रसन्न था।

चार दिन बाद तन्मय का जन्मदिन आ गया। बढ़िया वाला बड़ा-सा टेंट लगाया गया। अच्छी सजावट थी। खाने और कॉफी की एक ओर व्यवस्था थी। परोस करने वाले वेटर भी थे। जन्मदिन न लगकर शादी जैसी व्यवस्था लग रही थी। सजावट, लाइटिंग सब बहुत ही बढ़िया थे। खूब मेहमान, खूब धूमधाम।

प्रखर इतनी सजावट, इतने लोगों को देखकर आश्चर्य में पड़ गया। अन्य मित्र भी आ गए थे।

मिठाइयाँ भी काफी सारी थीं। एक सजी हुई टेबल पर रखी थीं। तन्मय ने मिठाई बाँटी, खाई तालियाँ बजीं– बधाई और शुभकामनाओं की आवाजें गूँजीं। बड़े-बड़े उपहारों के ढेर लग गए। आजकल बच्चों के जन्मदिन के बहाने व्यापारिक संबंध बढ़ाए जाते हैं। एक बार प्रखर की माँ ने प्रखर को बताया था, आज प्रखर स्वयं देख रहा था। प्रखर ने अपना उपहार तन्मय को दे दिया। तन्मय कई दिन तक अपने मित्रों को जन्मदिन में आए अपने उपहारों के बारे में बताता रहा।

प्रखर अपना हर काम समय से करता था, उसे पढ़ाई की बहुत चिंता रहती थी। तन्मय लापरवाह था। टी. वी. बहुत देखता था। शिखा से कॉपियाँ लेकर अपना काम पूरा करता था। तन्मय मेहनती कम और तिकड़मी अधिक था।

लगभग एक महीने बाद उनकी शाला में एक निबंध प्रतियोगिता की घोषणा हुई। कक्षा ८ के सभी विद्यार्थियों को उसमें भाग लेना अनिवार्य कर दिया था। विषय था– स्वामी विवेकानंद जी। तन्मय ने इस बात को गम्भीरता से नहीं लिया।

कई दिन बीत गए। एक दिन शिखा ने तन्मय से पूछा– ''तुमने विवेकानंद जी पर निबंध लिख लिया?''

''नहीं! क्या वाकई ये निबंध सबको लिखना है?'' तन्मय ने लापरवाही से पूछा।

''कल तुमने सुना नहीं। हमारी शिक्षिका ने कहा था। सबको ही लिखना है, परसों तक यह निबंध लिखकर देना है।'' शिखा ने कहा।

''क्या?'' तन्मय का मुँह खुला का खुला रह गया। शिखा तो चली गई। तन्मय परेशान हो गया। क्या करें? कैसे करें? कोई उसकी सहायता कर सकता है। अपना निबंध नकल करने के लिए उसे कौन देगा? इस परेशानी में उसे प्रखर का ध्यान आया। शाला से लौटते समय उसने प्रखर से पूछा– ''प्रखर! तुमने निबंध लिख लिया?''

''हाँ! लगभग पूरा ही है, एक बार पढ़कर और देखूँगा।''

''किस पुस्तक की सहायता से लिखा?'' तन्मय ने पूछा।

''कई पुस्तकों की सहायता से लिखा है।''

''मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ? मेरे पास विवेकानंद जी पर कोई पुस्तक ही नहीं है।'' तन्मय ने कहा।

''क्या बात करता है, तेरे जन्मदिन पर मैंने विवेकानंद जी पर तुझे एक बहुत अच्छी पुस्तक भेंट की है।''

''सच? मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया, मुझे पता ही नहीं।''

''अब घर जाकर देखना, कुछ पूछना हो तो मेरे पास आ जाना।''

प्रखर अपने घर की ओर मुड़ गया।

घर आकर तन्मय ने अपनी माँ से पूछा– ''मेरे जन्मदिन आए उपहार कहाँ रखे हैं?''

''कुछ तो खोल दिए, कुछ तेरी अलमारी में, कुछ ऊपर की अलमारी में रखे हैं। क्यों? तुझे क्या आवश्यकता पड़ गई?'' माँ ने पूछा।

''प्रखर ने मुझे एक पुस्तक उपहार में दी थी। मुझे उस पुस्तक की बहुत आवश्यकता है।''

तन्मय ने पुस्तक खोजनी प्रारंभ कर दी, पर उसे नहीं मिली। वह झुंझला पड़ा– ''उपहार में आई टी–शर्ट, पुलोवर सब सम्भाल कर रख लिए और वह पुस्तक न जाने कहाँ रख दी? माँ तुमने प्रखर का

उपहार खोलकर भी नहीं देखा।''

''तुम देख लेते, मैंने मना किया था क्या? तुम्हें तो टी. वी. देखने से फुर्सत नहीं मिलती।''

दोनों एक-दूसरे को दोष देते रहे। कमरे का सामान इधर-उधर पटकते हुए तन्मय बड़बड़ा रहा था- ''आज यदि पुस्तक न मिली तो कल तक निबंध कैसे लिखकर दूँगा। ये घर है या कबाड़ खाना।''

''तन्मय, मैं थोड़ी देर बाद फिर से देख दूँगी आ पहले खाना खा लें।'' माँ ने समझाते हुए कहा।

''मुझे नहीं खाना।'' तन्मय ने क्रोध में कहा।

माँ पुस्तक फिर से खोजने लगीं। अलमारी के नीचे तख्ते पर कुछ फोल्डर रखे थे। उनके नीचे पुस्तक का पैकेट मिल गया।

तन्मय ने तुरंत खोलकर देखा तो वह विवेकानन्द जी वाली पुस्तक थी। उसे स्वयं पर लज्जा अनुभव होने लगी कि अपने मित्र की पुस्तक को खोलकर भी न देखा।

वह भी घर वालों के साथ महँगे उपहारों को देखता रहा, सराहता रहा।

तन्मय ने पहले भोजन किया। फिर पुस्तक लेकर प्रखर के पास गया। प्रखर ने बहुत-सी पंक्तियों पर पेन्सिल से चिन्हित कर दिया और तन्मय को अच्छी तरह समझा दिया प्रखर ने।

''अब से रात तक लिख लूँगा मैं ये निबंध। आज यदि यह पुस्तक न होती तो मैं निबंध कैसे लिखता?''

''तन्मय! मेरी माँ ठीक कहती हैं कि पुस्तकें हमारा सच्चा साथी हैं। बल्कि मैं कहता हूँ कि हमारा सबसे अच्छा साथी हैं पुस्तकें।''

''प्रखर तू और तेरी माँ बिल्कुल ठीक ही कहती हैं।''

''तन्मय, किताबें पढ़ने से हमें तरह-तरह की जानकारी मिलती हैं। मुझे गूगल से भी अच्छी लगती हैं। पुस्तकें, मेरी माँ हमारे लिए बाल साहित्य की पुस्तकें और पत्रिकाएँ लाकर देती हैं।''

''तू ठीक कह रहा है प्रखर! अब मैं टी. वी. कम देखूँगा, बच्चों की पत्रिकाएँ मँगाऊँगा। प्रखर तू मेरा एक काम करेगा?''

''क्या?''

''जब तू अपने लिए कोई अच्छी पुस्तक लाए तो मेरे लिए भी ले आना।''

''ठीक है, ध्यान रखूँगा।'' प्रखर ने कहा।

इस पुस्तक की सहायता से तन्मय ने समय से निबंध लिखकर दे दिया। तन्मय स्वयं में हल्कापन अनुभव कर रहा था।

कुछ दिनों बाद निबंध प्रतियोगिता के परिणाम बताए। प्रखर को 'प्रथम पुरस्कार' मिला। तन्मय को 'सांत्वना पुरस्कार' मिला। सांत्वना पुरस्कार पाँच विद्यार्थियों को मिले। तन्मय को बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि उसे पहले कोई पुरस्कार नहीं मिला था। अब तन्मय का विश्वास और भी पक्का हो गया कि पुस्तक सबसे अच्छा और सबसे सच्चा साथी है।

– दिल्ली

सुभाषित

निश्चय वे नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।।

(वे लोग बुद्धि से अँधे ही हैं जो गुरु का महत्व कम मानते हैं। भगवान रूठ जाए तो गुरु रास्ता बता सकते हैं पर गुरु रूठ जाए तो ईश्वर भी शरण नहीं देते।)

इस तरह बनाओ

अजगर

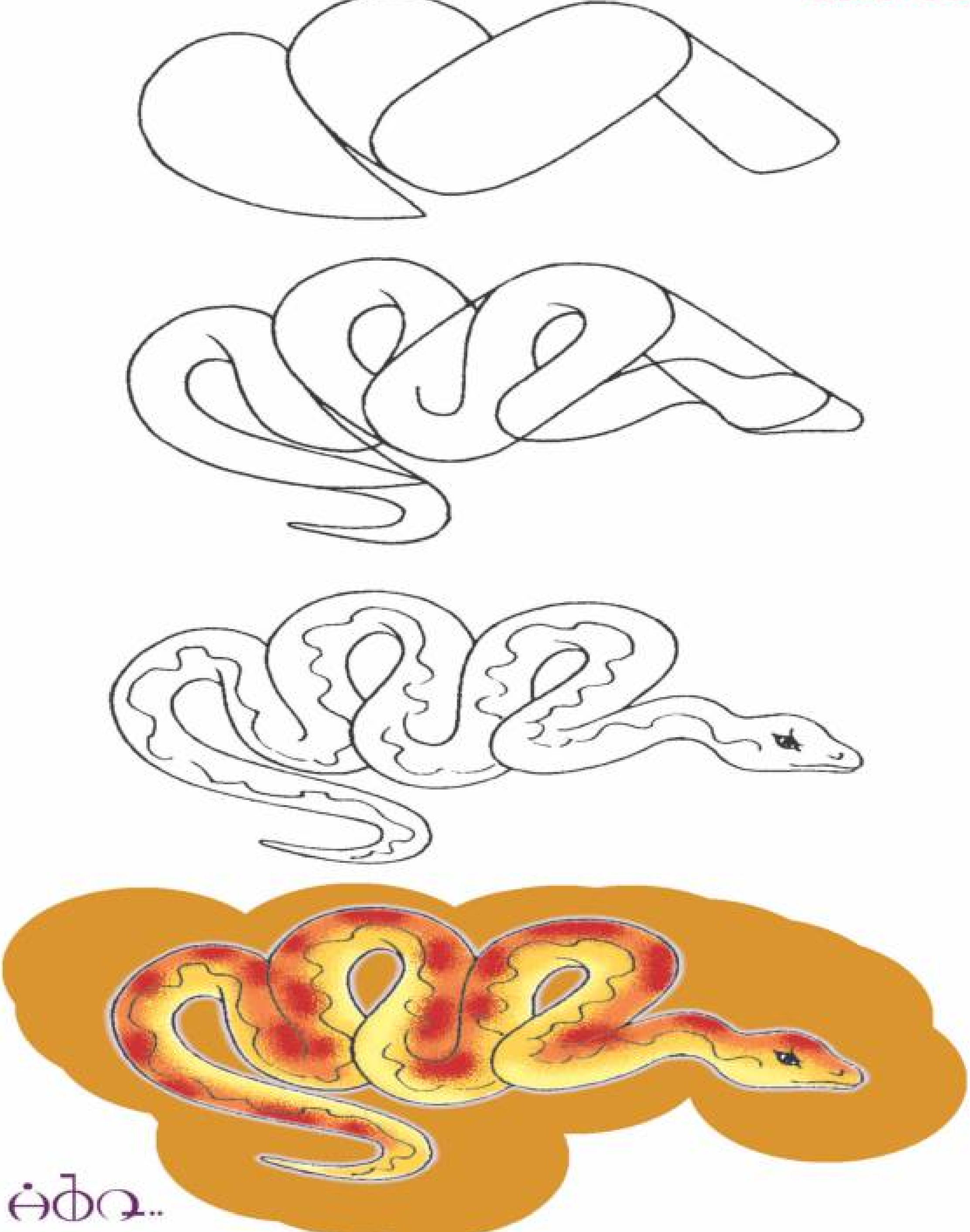

भोजन जीवन के लिए

– डॉ. मनोहर भंडारी

अल्पाहार और प्रात: का भोजन– संभव हो तो सूर्योदय के डेढ घंटे बाद ही अल्पाहार लें। तब तक सोलर प्लेक्सस सक्रिय हो जाता है। शुरूआत स्थानीय और मौसमी (सीजनल) फलों से करें। इससे आँतों में जमा पुराना बिना पचा भोजन विस्थापित हो जाता है और शरीर को तत्काल ऊर्जा भी प्राप्त हो जाती है।

उसके कुछ देर बात ही अन्न वाला अल्पाहार लें। अल्पाहार अथवा भोजन सदैव ही शांति से, धरती पर आसन बिछाकर, बैठकर, प्रसन्नतापूर्वक, चबा–चबाकर भगवान का प्रसाद मानते हुए करना चाहिए।

चम्मच का उपयोग कम से कम करें। हमारी अँगुलियों में वानस्पतिक जीवाणु होते हैं, जो पाचन में सहयोगी होते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार चम्मच से भोजन करने से टाइप २ डायबिटीज की संभावना बढ़ जाती है।

सदा ही भूख लगने पर ही भोजन करें। भूख से २५ प्रतिशत कम भोजन करें। इससे ऑक्सीडेशन की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। भोजन के आरम्भ में पित्त की प्रधानता होने से मिठाई का सेवन करें और अन्त में कफ की प्रधानता होने से तीखे पदार्थ का सेवन करें। भीगे पैर भोजन करें। गोविन्द–गोविन्द का स्मरण कर अहोभाव से भोजन का आरंभ करें और प्रार्थना करें कि **हे भगवान जैसे मुझे भोजन दिया, वैसे ही विश्व के सभी प्राणियों को भोजन देने की कृपा करें।**

भोजन में मौसमी और स्थानीय सब्जियों का उपयोग अनिवार्य रूप से करें। फल–सब्जियों में पौष्टिक तत्वों के साथ–साथ रेशे (फाइबर) भी होते हैं, जो पाचन क्रिया तथा अपचे पदार्थों के विसर्जन के लिए आवश्यक होते हैं। पीजीआई चंडीगढ़ के **डॉ. राकेश कपूर** के अनुसार खड़े–खड़े भोजन से कोलोन कैंसर की सम्भावना अधिक होती है। करोड़ों लोगों को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है, इसलिए थाली में एक कण भी जूठन के रूप में ना छोड़ें।

भोजन में कितने पदार्थ– थाली में दाल–रोटी, दाल–चावल और एक सब्जी–सलाद या प्रादेशिक अनुकूलता का सादा भोजन ही होना चाहिए। अधिक प्रकार के खाद्यों से पाचन संस्थान असमंजस की स्थिति में आ जाता है।

स्वास्थ्य भोजन के अधीन होता है– कश्यप मुनि के अनुसार **आरोग्यं भोजनाधीनम्**। ऐसा ही हिप्पोक्रेटस् का भी कथन है। अतएव सात्विक, शुद्ध, शाकाहारी, ताजा भोजन करें। सदैव भूख से कम खाएँ। **नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट ऑफ अमेरिका** के अनुसार आहार की अनियमितता से पुरुषों के ६०% और महिलाओं के ४१% कैंसर का संबंध पाया जाता गया। **मिशिगन साइंस इस्टीट्यूट** के आजीवन प्राध्यापक **डॉ. बर्नार्ड एग्रानॉफ** एम. डी. के अनुसार आहार परिवर्तन से मस्तिष्क की क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

कुल्लें अवश्य करें– भोजन के बाद तब तक पानी से कुल्लें करें, जब तक कि मुँह से चिकना–चिकना कफ जैसा पदार्थ (श्लेष्मा) निकलना बंद न हो जाए। आयुर्वेद के अनुसार यह श्लेष्मा स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं होता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

पांडवों का वनवास

– मोहनलाल जोशी

(गत अंक से आगे)

द्रौपदी का कौरव सभा में अपमान हुआ। पूरे संसार में दुर्योधन और कौरवों की निंदा होने लगी। परन्तु दुर्योधन बहुत ही दुष्ट प्रवृत्ति का था। उसने पिता धृतराष्ट्र से कहा– ''आपने द्रौपदी को वरदान दे दिया। पांडवों को उनका राज–पाट वापिस कर दिया। मैं बहुत दुखी हूँ।''

धृतराष्ट्र ने एक बार फिर युधिष्ठिर को बुलाया। इस बार जुए में हारने वाले को बारह वर्ष का वनवास एवं एक वर्ष के अज्ञातवास की शर्त रखी। शकुनि ने फिर दाँव खेला। शकुनि जीत गया।

युधिष्ठिर अपने भाइयों व द्रौपदी के साथ वनवास के लिए निकल गए। सभी ने वल्कल वस्त्र पहन लिए। राज–पाट छोड़ दिया। माता कुन्ती, काका विदुर के घर रहीं।

युधिष्ठिर के साथ हजारों ग्रामवासी और अनेक ब्राह्मण भी रवाना हुए। कुछ दूर जाने पर अधिकांश को युधिष्ठिर ने लौटा दिया। फिर भी अनेक वेदपाठी ब्राह्मण उनके साथ वन में चले गए।

अक्षय पात्र

युधिष्ठिर को बारह वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञात वास मिला था। नगर के बहुत सारे ब्राह्मण उनके साथ आ गए। वे पाण्डवों को धार्मिक तथा ज्ञान की कथाएँ सुनाते थे।

युधिष्ठिर ने सोचा– मैं राजा हूँ। धर्म के अनुसार इन ब्राह्मणों के भोजन की व्यवस्था मुझे करनी चाहिए। उसने सूर्य भगवान की स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न होकर सूर्य भगवान प्रकट हुए। उन्होंने युधिष्ठिर को वरदान दिया। सूर्य भगवान ने युधिष्ठिर को तांबे का एक पात्र दिया। वह अक्षय पात्र था।

सूर्य भगवान ने कहा– ''इस पात्र में द्रौपदी जो भी भोजन पकाएगी वह अक्षय होगा। जब सब भोजन कर लेंगे तब समाप्त नहीं होगा। अंत में द्रौपदी के भोजन करने पर ही भोजन समाप्त होगा।

उसके बाद वह इस पात्र को स्वच्छ कर लेगी। युधिष्ठिर के पास अक्षय पात्र आ गया। वे सभी का भरण–पोषण करने लग गए।

(निरंतर अगले अंक में)

– बाड़मेर (राजस्थान)

मित्रता का महत्व

– दिनेश 'दर्पण'

जिन दिनों दिल्ली के राजा अनंगपाल राज करते थे। उन्हीं दिनों शब्दभेदी बाण संधान की विद्या में गुरु रामदास का बड़ा नाम था। यही कारण था कि उनके आश्रम में इस विद्या को सीखने के लिए देश–विदेश के अनेक राजकुमारों की भीड़ लगी रहती थी।

पृथ्वीराज चौहान राजा अनंगपाल के नाती थे। जब पृथ्वीराज की आयु केवल पाँच वर्ष की थी। तब से उन्हें गुरु रामदास जी के आश्रम में भेज दिया था। उन्हीं दिनों चंद नामक एक भाट (चारण) पुत्र भी गुरुजी के आश्रम में रहकर विद्याध्ययन कर रहा था। उस समय उसकी आयु मात्र सात वर्ष की थी। वह पढ़ने लिखने में बहुत तेज था। गुरु रामदास जी चंद से बहुत प्रसन्न रहते थे। साथ–साथ रहते हुए पृथ्वीराज और चंद गहरे मित्र बन गए थे। पृथ्वीराज की जहाँ अस्त्र–शस्त्र की विद्या में रुचि अधिक थी, वहीं चंद काव्य कला के अध्ययन में विशेष रुचि रखता था। अब गुरुजी के आशीर्वाद के पृथ्वीराज और चंद दोनों ही समान रूप से अधिकारी थे।

एक बार गुरु रामदास ने अपने आश्रम में यज्ञ आयोजित किया। पूरे जोर–शोर से यज्ञ की तैयारियाँ होने लगी। गुरुजी ने चंद को आदेश दिया कि वह जंगल से आम के पत्ते तोड़कर लाए। चंद को अकेला जंगल जाते देखकर पृथ्वीराज ने भी चंद के साथ जंगल में जाने की इच्छा प्रकट की। पर गुरुजी चाहते थे कि चंद अकेला ही जंगल में पत्ते लेने जाए। पृथ्वीराज के विशेष आग्रह पर गुरुजी ने उसे भी चंद के साथ जंगल में जाने की अनुमति दे दी।

दोनों मित्र हँसते–हँसते जंगल में जा पहुँचे। उन्हें एक आम का पेड़ मिल गया। चंद ने पृथ्वीराज से कहा कि– ''मैं पेड़ पर चढ़कर पत्ते तोड़कर नीचे गिराता जाऊँगा और तुम्हें उन्हें एकत्र करते जाना है।'' परन्तु पृथ्वीराज को यह बात स्वीकार नहीं थी।

वह स्वयं पेड़ पर पत्ते तोड़कर नीचे गिराना चाहता था। इसलिए चंद के लाख मना करने पर भी पृथ्वीराज चंद के पीछे–पीछे चुपचाप पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन यह क्या? अचानक चंद का पैर पेड़ की डाल से फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा। और नीचे गिरते ही वह बेहोश हो गया।

चंद की यह दशा देखकर पृथ्वीराज के तो मानो पेड़ बैठे–बैठे ही प्राण सूख गए। उसने चाहा कि वह चंद की सहायता के लिए तुरन्त ही पेड़ से नीचे कूद पड़े पर पेड़ की डाल की ऊँचाई अधिक होने से पेड़ पर से कूदना सरल नहीं था। उसने धीरे–धीरे नीचे उतरने का प्रयास भी किया पर वह सफल नहीं हो सका। मन में डर होने के कारण वह पेड़ से नीचे नहीं कूद सका और अपनी विवशता पर पेड़ पर बैठे–बैठे ही आँसू बहाने लगा।

जब उसने देखा कि उसके प्रिय मित्र चंद का नीचे गिरने से सिर फट गया है और खून बह रहा है तो उससे रहा नहीं गया और तभी उसने देखा कि एक बाज चंद के घायल सिर पर चोट पहुँचाने वाला है। तो उसने हिम्मत करके अपनी आँखें बंद की और चंद को बचाने के लिए पेड़ पर से नीचे कूद पड़ा। उसने सोचा कि चाहे उसके प्राण चले जाएँ पर मित्र के प्राण किसी भी परिस्थिति में बचाना है। और अगले ही पल चमत्कार हो गया।

चंद और पृथ्वी के बहुत देर तक आश्रम में नहीं आने पर गुरु रामदास चिंतित हो गए। और वे उन दोनों को खोजने के लिए जंगल की ओर निकल पड़े और ठीक उसी समय गुरुजी आम के पेड़ के नीचे पहुँचे जिस समय पृथ्वीराज नीचे कूदा तो उन्होंने पृथ्वी को अपनी गोद में झेल लिया। और अपनी बाँहों में समेट लिया। गुरु जी तुरन्त ही मन ही मन इस स्थिति के कारण को समझ गए और दोनों को आश्रम ले आए और उन दोनों के उपचार में जुट गए।

अपने मित्र की संकट की घड़ी में सहायता न कर पाने के कारण पृथ्वीराज को बहुत दु:ख था। उसे बहुत पछतावा हो रहा था। परन्तु जब गुरु रामदास जी ने उसके साहस और मित्र के प्रति प्रेम–भाव की प्रशंसा की तब कहीं उसके मन का बोझ कुछ हल्का हुआ। इतिहास में सम्राट पृथ्वीराज चौहान और महाकवि चंद बरदाई की मित्रता प्रसिद्ध है, मृत्यु के कठिन समय में भी वे एक–दूसरे से अलग नहीं हुए।

– उज्जैन (म. प्र.)

बाल लेखनी

ऑपरेशन सिंदूर

– खुशी चंदेवा

ईंट का जवाब पत्थर से देना
भारत को आता है।
आटा माँगने वाला
हमें परमाणु बम से धमकाता है।
उसे क्या लगा उसकी धमकी से
भारत डर जाएगा।
अभी तो पानी बंद किया
आधी रात में सवेरा दिखाए बिना
भारत कैसे चुप रह जाएगा।
पाकिस्तान में बैठे आकाओं को
भारत ने सबक सिखाया था।
भारतीय सेना ने एक बार फिर
दुश्मन की धरती पर तिरंगा लहराया था।
अभी तो यह शुरूआत है
ऑपरेशन सिंदूर का श्री गणेश
आतंकवाद को जड़ से मिटाने का विश्वास है
भारत का पाकिस्तान को है संदेश।
अब हाफिज सईद और मसूद अजहर की बारी
भारत की पूरी है तैयारी।
बच के रहना पाकिस्तान
आतंकवाद खत्म करना अब हमारी जिम्मेदारी।।

– भोपाल (म. प्र.)

मैं संभव हूँ : केया हटकर

– रजनीकांत शुक्ल

वह २०१० का वर्ष था। वर्ष समाप्त होने में अभी समय था। ऐसे में मोनिशा के घर में कोई नन्हा मेहमान आने वाला था। उनकी चार वर्ष की बेटी नायरा बहुत प्रसन्न थी। अपने साथ में खेलने के लिए घर में एक नन्हा जीते–जागते खिलौने के रूप में कोई भाई या बहन उसे मिलने वाला था।

और आखिरकार वह दिन आ ही गया जब नन्ही–सी जान केया ने उस घर में जन्म लिया। नायरा की खुशी का ठिकाना न था वह हमेशा से अपने जैसी एक छोटी बहन ही तो चाहती थी। किन्तु मोनिशा थोड़ी चिन्ता में थी क्योंकि केया के शरीर का वजन सामान्य से बहुत कम था और जन्म से ही उसके गर्दन के चारों ओर घाव वाली दो डोरियाँ थीं।

उन्होंने सोचा कि समय के साथ केया स्वस्थ हो जाएगी। किन्तु जब केया ग्यारह महीने की हुई और उसका वजन नहीं बढ़ा बल्कि वह पहले से अधिक कमजोर हो गई तो घबराई मोनिशा ने इसकी जाँचें कराईं। किन्तु परिणाम देखकर उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई।

उन्हें पता चला कि केया को 'स्पाइनल मस्कुलर अट्रोफी' नामक घातक आनुवांशिक विकार है। इसका दुनिया में अब तक कोई उपचार नहीं खोजा जा सका है। चिकित्सकों ने बताया कि केया का अगले जन्मदिन तक जीवित बच पाना असंभव है। मोनिशा को एक पल को तो समझ नहीं आया कि वे ऐसे में क्या करें?

साहस करके उन्होंने निर्णय लिया कि वे नौकरी करेंगी और उनके पति परिवार की देखभाल के लिए अपनी नौकरी छोड़ देंगे। धीरे–धीरे समय बीतने लगा। लगातार चिकित्सकों के परामर्श से उन्होंने केया के पोषण, देखभाल और नियमित फिजियोथेरेपी करते हुए बीमारी की गति को मंद किया और इस तरह उसकी जीवनरेखा को बड़ा किया। फिर भी केया को वजन बढ़ने, साँस लेने और बोलने की क्रियाओं में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। चल तो वह जन्म से ही नहीं पाती थी किन्तु कृत्रिम सहारों के साथ वह बैठ पाने में सफल रही।

ऐसी देखभाल के साथ २०१४ का वर्ष आ गया। उस समय जहाँ नायरा आठ वर्ष की हो चुकी थी तो केया चार वर्ष की। अब उन्होंने केया को विद्यालय में प्रवेश कराने का निश्चय किया। किन्तु यह जानकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि केया की ऐसी स्थितियों के साथ कोई भी शाला प्रवेश देने को तैयार नहीं थी।

काफी प्रयत्नों के बाद उन्हें एक विद्यालय में प्रवेश मिला। उसने केया की व्हील चेयर को कक्षा तक जाने के लिए रैंप भी बनवा दी। केया ने भी उन्हें निराश नहीं किया और अपने प्रतिभाशाली प्रदर्शन से उन सबका मन मोह लिया। केया समय के साथ शारीरिक रूप से कमजोर होती जा रही थी किन्तु वह स्वयं को साबित कर रही थी। किन्तु दूसरी ओर केया की देखभाल के कारण घर की परिस्थितियाँ तनावपूर्ण रहने लगीं। स्थिति यहाँ तक बिगड़ी कि एक दिन केया के पिता अपने इस परिवार को उसके हाल पर छोड़कर हमेशा के लिए चले गए।

ऐसे में मोनिशा ने आने वाली कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए पके पकाए भोजन को स्टार्टअप 'माइंड योर टंग' प्रारंभ किया। हालाँकि इन तेरह वर्षों में केया की परेशानी का उपचार खोजा जा चुका था। किन्तु वह बहुत महँगा था। कठिनाई यह थी कि इसके लिए चिकित्सा बीमा का समर्थन नहीं था। उन्हें केया के जीवन को आगे बढ़ाने के लिए और धन चाहिए था। उसकी रीढ़ की हड्डी में भी परेशानी हो गई थी जिसका ऑपरेशन

किया गया। उसे अव्यवस्थित जमे हुए कूल्हे और घुटने के जोड़ों, गुर्दे की पथरी सहित अनेक आंतरिक परेशानियाँ थीं। वह अस्सी प्रतिशत विकलांगता के साथ व्हील चेयर पर थी।

जब उन्होंने केया के उपचार के लिए धन माँगा तो अनेक लोगों, संस्थाओं ने सहयोग किया। तब उन्हें अनुभव हुआ कि केया जैसी परेशानी वाले और परिवार होंगे जो हमारे जितने भी जागरूक नहीं होंगे। हमें उनके बारे में भी सोचना चाहिए। इस प्रकार २०२३ में एक गैर लाभकारी पहल 'आई एम पासबिल एंड स्मार्ट' प्रारंभ की जिसके माध्यम से उन्होंने ऐसे कुछ परिवारों की सहायता की।

इस सारी परेशानियों के बीच अच्छा काम यह रहा कि केया की सोच सदैव सकारात्मक रही। तन की इन सारी दिक्कतों के बाद भी केया ने उन्हें स्वयं पर हावी नहीं होने दिया और साहस के साथ निरन्तर और चुपचाप अपनी क्षमताओं को निखारने में लगी रही।

केया अपनी शाला की हेड गर्ल रहीं, अकादमिक टॉपर रहीं और आज एक प्रशंसित बाल लेखिका के साथ–साथ विकलांगता अधिवक्ता भी हैं।

केया ने अपनी पहली पुस्तक 'डांसिंग ऑन माई व्हील्स' बारह वर्ष की छोटी–सी आयु में तब लिखी जब वे अपनी रीढ़ की हड्डी की सर्जरी से उबरने के दौरान कई महीने अपने बिस्तर पर रही थीं। यह पुस्तक ब्रिबुक द्वारा २१ जनवरी २०२३ को प्रकाशित की गई। फरवरी २०२३ को रिलीज होने के बाद एक महीने से भी कम समय में उनकी इस पुस्तक की एक हजार से भी अधिक प्रतियाँ बिक गईं। उन्हें ब्रिबुक द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा लेखक मेले में एक लाख बाल लेखकों के बीच दूसरे राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ बिक्री लेखक के रूप में सम्मानित किया गया।

इससे उत्साहित होकर केया ने दूसरी पुस्तक 'आई एम पासबिल' लिख डाली। जिसकी एक महीने

के भीतर ढाई हजार से भी अधिक प्रतियाँ बिक गईं। वर्ष २०२४ के ब्रिबुक द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा लेखक मेले में भारत के बीस हजार विद्यालयों के दो लाख से भी अधिक बच्चों के बीच केया को लगातार दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ बिक्री लेखक का सम्मान मिला। किन्तु इस बार वे पहले नम्बर पर थीं। उन्हें न केवल ब्रिबुक ग्लोबल हॉल ऑफ फेम में बल्कि इस असाधारण योगदान और उपलब्धियों के लिए छब्बीस देशों के शीर्ष वैश्विक लेखकों में भी शामिल किया गया।

केया की तीसरी पुस्तक 'हाऊ टू राइट ए बुक' है। जिसे एक बार फिर पाठकों का शानदार समर्थन मिला है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर केया को वर्ष २०२४ में वैश्विक स्तर की तीस सामाजिक प्रभाव उद्यमी में से एक के रूप में मान्यता मिली है।

एक लेखक होने के साथ–साथ केया एक उभरती हुई पॉडकास्टर और यूट्यूबर भी हैं। उन्होंने मुंबई में समावेशन का पक्ष लेते हुए एक प्रभावशाली

टेडएक्स टाक दी। यही नहीं इंडिया इंक्लूजन समिट, फाइनेंशियल फ्रीडम फ्रेटरनिटी आदि अनेक मंत्रों पर अपने लचीलेपन और सशक्तिकरण की कहानी से लोगों को प्रेरित कर उनका दिल जीत लिया।

उन्होंने कला और लेखन पुस्तकों पर अद्‌भुत सामग्री बनाई है और उनकी पॉडकास्ट श्रृंखला उन युवा लेखकों के साक्षात्कार पर आधारित है जो सार्थक और प्रभावशाली कहानियाँ लिखते हैं।

इन सारी असाधारण उपलब्धियों का ही परिणाम था कि केया हटकर को देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से सम्मानित किया। यह पुरस्कार केया को राष्ट्रपति भवन में वीर बाल दिवस, २६ दिसम्बर २०२४ के अवसर पर प्रदान किया गया।

भारत में किसी भी बच्चे को दिया जाने वाला यह सम्मान केया को उनकी पुस्तकों, प्रेरक वार्ताओं और उनकी गैरलाभकारी पहल 'आईएम पॉसबिल और स्मार्ट' के माध्यम से दुर्लभ बीमारियों और इसकी रोकथाम की आवश्यकताओं के बारे में व्यापक जागरूकता बढ़ाने में दिए गए उनके योगदान के बारे में दिया गया है।

केया की इच्छा है कि परिवार की योजना बनाने वालों के लिए जीन–मैपिंग टेस्ट अनिवार्य कर दिया जाए ताकि किसी भी बच्चे को उसके जैसी यातनाओं का सामना न करना पड़े। नियमित स्वास्थ्य जाँच में और मेडिकल बीमा कवर में इस टेस्ट को शामिल किया जाए। ऐसा करना उस मासूम बच्चे परिवार, समाज और देश के हित में रहेगा।

नन्हे मित्रो!

दिल जो कहता करें, न ज्यादा सोचें विचारें,
लगे समर्पित रहें, निरन्तर इस व्रत को धारें।
मंजिल कदमों में होगी निश्चय ही, करना यह,
कितनी भी हों कठिन स्थिति, हिम्मत ना हारें।।

– दिल्ली

भूल भुलैया 'ज' से जलेबी

– चाँद मोहम्मद घोसी

नटखट अनन्या को जलेबी का स्वाद बहुत अच्छा लगता है। आज उसका मन जलेबी खाने के लिए ललचा रहा है। जलेबी का थाल उसके सामने रखा है लेकिन वहाँ तक पहुँचने का रास्ता उसे ज्ञात नहीं है। प्रिय मित्रो! आप अनन्या को जलेबी के थाल तक पहुँचा दीजिए जाकि वह जी भरकर स्वादिष्ट जलेबी खा सके।

– नागौर (राजस्थान)

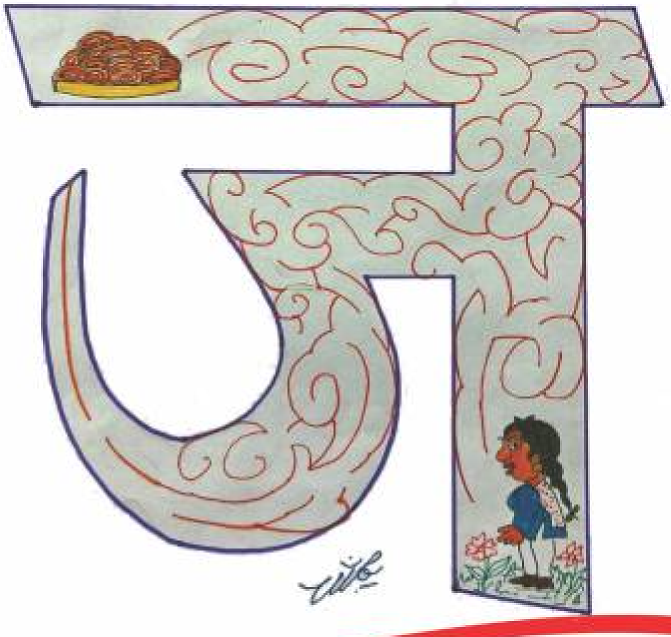

आज्ञाकारी राजू
चित्रकथाः देवांशु वत्स
राम और राजू घर में अकेले थे। राजू ने गड़बड़ कर दी!
ओह! तुमने चीनी के बदले दूध में नमक डाल दिया!
ओह!
सुन लो!
मुझसे पूछे बिना कोई काम नहीं करोगे!
समझ गया!
फिर राम अपनी पढ़ाई करने बैठ गया।
राम भैया, राम भैया!
ओह!
क्या हुआ राजू?
राम भैया...
...राम भैया, रसोई घर में बिल्ली दूध पी रही है...
....उसे भगा दूं क्या?
क्या?

दोस्त की चिंता

– हेमंत यादव

बंटी बंदर अपने कमरे में लेटा हुआ था। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी। वह दो दिन पहले आए भूकंप के बारे में सोच रहा था। भूकंप का सारा दृश्य उसकी आँखों के सामने घूम रहा था।

दो दिन पहले दिन के ठीक ग्यारह बजे, जब वह अपने मित्र सोनू बंदर के साथ शाला में अपने कक्षा कक्ष में बैठा हुआ पढ़ रहा था कि तभी जोरदार भूकंप आया। पूरा कक्षा का कमरा और छत पर लटका हुआ सीलिंग फैन इधर–उधर हिलने लगा था। यह देखकर सब डर गए।

बच्चे कक्षा से निकलकर बाहर भागते, इससे पहले ही कक्षा के कमरे की छत और दीवारें भर–भरा कर गिरने लगीं।

बंटी बंदर उस समय आगे की बेंच पर बैठा हुआ था। जैसे ही उसे लगा कि भूकंप आया है– ''सोनू जल्दी से भा....ग। भूकंप आया है।'' कहता हुआ वह फुर्ती से बाहर मैदान की ओर भागा। लेकिन तभी उसके सिर पर एक ईंट गिरी और पैर में ठोकर भी लगी। वह नीचे गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

उसे जब होश आया तो उसने अपने आपको अस्पताल के कमरे में पाया। उसके माँ–पिताजी वहीं खड़े थे।

''अब कैसे हो बेटा! तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?'' माँ–पिताजी ने पूछा।

''जी मैं ठीक हूँ।'' उसने धीरे से उत्तर दिया।

तभी उसे अपने मित्र सोनू की याद आई। सोनू

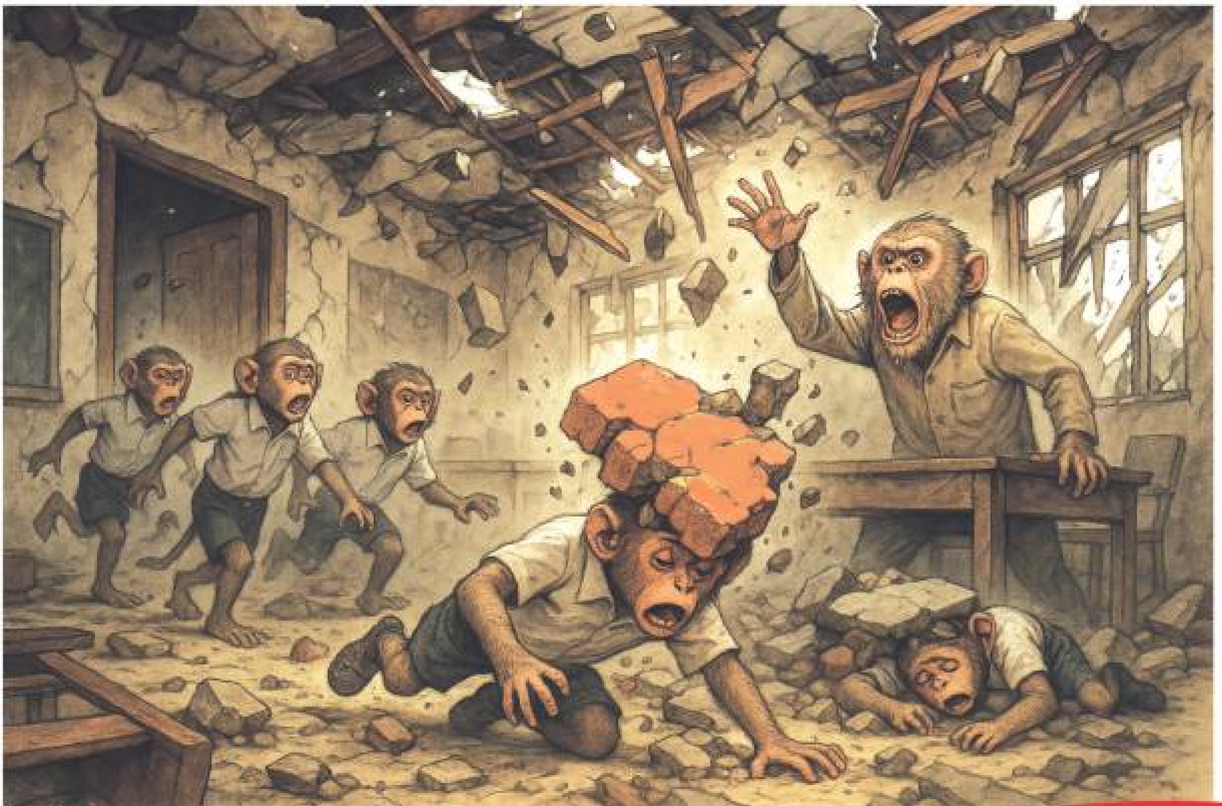

भूकंप के समय उसके साथ ही कक्षा में बैठा हुआ था। उसने भागते समय सोनू को भी भागने के लिए कहा था। उसे सोनू की चिंता होने लगी। उसने सोनू का हाल जानने के लिए मोबाइल से फोन किया। किन्तु उधर से कोई उत्तर नहीं आया।

उसे सोनू की और चिंता सताने लगी। उसने माँ-पिताजी से उस दिन की बात बताते हुए अपने मित्र सोनू के बारे में पूछा। उसके पिताजी ने गंभीर स्वर में बताया- ''बेटा! भूकंप से गिरे मलबे में तुम्हारे विद्यालय के बहुत से बच्चे दब गए थे। बचाव कर्मियों ने तत्परता दिखाते हुए बच्चों को बचा तो लिया, किन्तु बच्चे बुरी तरह घायल हो चुके थे।''

''मेरा मित्र सोनू कैसा है?'' उसने पूछा।

''बेटा! सोनू का कोई पता नहीं चल रहा है।'' उसके पिताजी ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया।

''कहीं वह भागते समय मलबे में तो नहीं दब गया।'' उसका मन सोनू को लेकर बुरी आशंका से घबराने लगा।

तभी पिताजी ने उसे दिलासा देते हुए कहा- ''बेटा! चिंता की कोई बात नहीं है। बचावकर्मी अभी भी मलबे में दबे हुए बच्चों का पता लगा रहे हैं।''

बंटी बेचैन होकर कुछ सोचने लगा। तभी अचानक उसके दिमाग में एक बात आई। उसके पिताजी बहुत बड़े साइंटिस्ट थे। वे जीव-जंतुओं पर तरह-तरह के प्रयोग करते रहते थे।

उन दिनों वे चूहों के दिमाग में इलेक्ट्रोड लगाकर रोबोरैट बना रहे थे। उनका बनाया हुआ रोबोरैट किसी भी मलबे में दबे हुए चीजों के बारे में पता लगा लेता था।

उसने पिताजी से विनंती करते हुए कहा- ''पिताजी! बचावकर्मी तो बच्चों को ढूँढ़ने के लिए अपना काम कर ही रहे हैं। क्या आप अपने रोबोरैट से सोनू का पता लगाने में उनकी सहायता नहीं कर सकते? पिताजी! आप कुछ कीजिए।''

वे कुछ देर सोचने लगे। फिर बंटी को विश्वास दिलाते हुए बोले- ''बेटा! तुम चिंत मत करो। मेरे मस्तिष्क में पहले यह बात आई ही नहीं। मैं आज ही एक रोबोरैट मलबे में भेजकर बच्चों का पता लगाऊँगा।''

उन्होंने एक चूहे के दिमाग में इलेक्ट्रोड लगाया और उसकी पीठ पर एक छोटा-सा रेडियो रिसीवर भी लगा दिया। फिर उस रोबोरैट को मलबें में घुसने का सिग्नल दे दिया। सिग्नल मिलते ही रोबोरैट मलबे में घुसकर बच्चों का पता लगाने लगा।

कुछ ही देर में उन्हें मलबे में किसी के होने का सिग्नल मिलने लगा। उन्होंने सिग्नल का अध्ययन किया तो मारे प्रसन्नता के उछल पड़े और बोले- ''मलबे के अंदर एक बच्चा जीवित है। बच्चे को शीघ्र से बिलकुल सावधानी से निकालना होगा।''

बचावकर्मी सावधानी से मलबा हटाने लगे। उन्हें टेबल के नीचे एक बच्चा बेहोशी की स्थिति में मिल गया। वह बच्चा कोई और नहीं, सोनू था। सोनू के माँ-पिताजी भी अपने बच्चे को लेकर बहुत चिंतित थे। सोनू को देखकर उनकी जान में जान आई।

सोनू बेहोश था किन्तु उसकी सांस चल रही थी। उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती करा दिया गया तो जान बच गई।

सोनू के माँ-पिताजी ने बंटी के पिताजी का धन्यवाद किया और कहा- ''आज यदि आप लोग नहीं होते तो मेरा बच्चा मलबे में ही मर गया होता। आपने तो कमाल कर दिया।''

बंटी के पिताजी मुस्कुराते हुए बोले- ''यह कमाल मेरे रोबोरैट ने और बंटी ने किया है। यदि बंटी को अपने मित्र की चिंता नहीं होती तो हमारा ध्यान शायद ही इस ओर जाता।''

- फारबिसगंज

(बिहार)

गुरु रूप भगवाध्वज

– नारायण चौहान

पिछली कड़ियों में मैंने मेरे संचालन में महत्वपूर्ण दायित्व निर्वहन करने वालों मेरे सर संघचालकों के संदर्भ में बताया था। आज मैं आपको मेरे स्वयंसेवकों एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए गुरु का महत्व एवं उसकी स्थापना के संदर्भ में जानकारी देना चाहता हूँ।

भारत वर्ष संस्कारों और परम्परा की भूमि है। यहाँ व्यक्तिगत, संगठन या सम्प्रदाय की प्रेरणा स्रोत हमेशा गुरु के रूप में रहा है। हमेशा गुरु का संरक्षण आशीर्वाद और मार्गदर्शन पवित्र भगवा के साथ प्राप्त होता है।

मैंने इतिहास के झरोखों से देखा है। श्रीरामचन्द्र जी के रथ पर पवित्र धर्म ध्वजा, भगवा ध्वज के रूप में लहराती रही है।

महाभारत में श्रीकृष्ण भगवान के रथ पर यही परमपवित्र ध्वज प्रेरणा देता था। गुरु शिष्य के संपूर्ण सामर्थ्य को विकसित करते हैं। वह नश्वर सत्ता नहीं चैतन्य विचारों का प्रतिरूप होता है।

मेरे कार्य के आरंभ से ही विचार आया गुरु किसे बनाया जाए? बहुत विचार–विमर्श करके निर्णय हुआ गुरु व्यक्ति नहीं वह तो भारत वर्ष को चिर स्थाई प्रेरणा देने वाला दैदिप्यमान परम पवित्र भगवा ध्वज ही हो सकता है।

अत: मेरे स्वयंसेवकों ने परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु के रूप में स्वीकार किया।

मेरे संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने १९२५ में ही संघ की स्थापना के समय गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके पीछे का मूल भाव यह है कि कोई व्यक्ति पतित हो सकता है किन्तु विचार और पावन प्रतीक पतित नहीं हो सकता।

भारत भूमि के कण–कण में यह चैतन्य स्पन्दन विद्यमान है। पावन त्यौहार पर्व सभी में गुरु की परम्परा प्रवाहित होती है। हमारे यहाँ गुरु के संदर्भ में कहा है– ''अखंडमंडलाकार व्याप्तं येन चराचरम्'' अर्थात् गुरु एक चिरंतन आध्यात्मिक सत्ता के रूप में स्थापित है। यह कभी नष्ट नहीं होता। इसलिए इसे व्यक्ति की नहीं अपितु विचार की संज्ञा दी गई है।

गुरु रूप भगवाध्वज का महत्व

मेरे गुरु के रूप में परम पवित्र भगवा ध्वज का बहुत महत्व है। भगवा रंग हमारी त्यागमयी संस्कृति का प्रतीक है। यह रंग लाखों वर्षों की त्याग पूर्ण परम्परा का प्रतीक है। हमारे ऋषि–मुनियों ने इस रंग के वस्त्रों को धारण कर इसकी महिमा बढ़ाई है।

यज्ञ की ज्वालाएँ जब उठती हैं तब इसी प्रकार की अग्नि उत्पन्न होती है यह भगवा ध्वज तेज का भी प्रतीक है।

प्राची की स्वर्णिम आभा जब सूर्योदय के प्रकट होने से पूर्व उत्पन्न होती है। यह वही रंग है जो हमें उदीयमान सूर्य समान सनातन विचार के साथ चलने की प्रेरणा देता है।

प्रतिदिन लगने वाली शाखा में ध्वज को स्थापित किया जाता है। उन्हीं से आज्ञा लेकर प्रत्येक

स्वयंसेवक अपना कार्य करते हैं उन्हीं की आज्ञा से कार्यक्रम समाप्त करते हैं।

मेरे स्वयंसेवकों के द्वारा वर्षभर में छः उत्सव होते हैं। उसमें गुरु पूर्णिमा का उत्सव महत्वपूर्ण उत्सव है।

इस अवसर पर परम पवित्र भगवा ध्वज का पूजन गुरु के रूप में किया जाता है। प्रत्येक स्वयंसेवक अपना तन, मन और श्रद्धानिधि इस अवसर पर समर्पित करते हैं। मेरे कार्य संचालन की महत्वपूर्ण आर्थिक व्यवस्थाएँ इसी समर्पण राशि से नियोजित होती है।

एक बार आप भी शाखा स्थान पर अवश्य आना यहाँ हमारे परम पवित्र भगवा ध्वज का दर्शन होगा ही।

– इन्दौर
(मध्य प्रदेश)

कविता – बलिदान दिवस ३१ जुलाई

वीर उधम सिंह

– कल्याणमय आनंद

बचपन में मात–पिता को खोया
पर न खोया वह आत्माभिमान।
अनाथालय में हुई परवरिश
पर प्रदीप्त रखा राष्ट्राभिमान।।

भूला रुदन और सब संताप
पर न भूला देश का अपमान।
देख जालियावाला बाग का
क्रूर, अमानवीय रक्तस्नान।।

ली शपथ, उठा मिट्टी वहाँ की
हरेगा दुष्ट डायर का प्राण।
दृढ़निश्चयी उधम सिंह था वह
भारत माँ की सच्ची संतान।।

जतनकर जब वह पहुँचा लंदन
तब चप्पा–चप्पा मारा छान।
एक सभा में देख डायर को
उसने तुरत बंदूक दी तान।।

कर्मवीर ने चलाई गोली
डायर हुआ तत्क्षण निष्प्राण।
पराक्रमी उधम सिंह ने किया
ब्रिटिश सत्ता को कंपायमान।।

फाँसी पर जब चढ़ा उधम सिंह
मुखड़े पर थी अविजित मुसकान।
सुन समस्त भारतवासियों ने
किया उसके शौर्य का जयगान।।

– कटिहार (बिहार)

बूँदा आखिर है कहाँ?

– नीलू सोनी

''डिम्पी दीदी! डिम्पी दीदी जल्दी आओ।'' परी की चीख सुन बिस्तर पर बेफिक्र मोबाइल चलाते हुए ही डिम्पी ने कहा– ''क्यों?''

चूँकि परी घर में सबसे छोटी और नटखट थी और अपनी ऊल–जलूल उपायों से सबसे चुटकियाँ लेने की उसकी आदतों से सभी परिचित थे। इसलिए डिम्पी अभी भी बेफिक्र ही थी।

तभी परी ने पुन: डरी हुई आवाज से कहा– ''अरे! आओ।''

डिम्पी बोली– ''पर क्यों?''

परी– ''अरे, मेरे कान की बाली खुलकर गिर गई है।''

डिम्पी– ''तो, उठा ना... ला मैं वापिस पहना दूँगी।''

परी– ''अरे! पर उसका बूँदा मिल नहीं रहा है वॉश बेसिन के अंदर चला गया।'' डिम्पी सुनते ही दौड़ी– ''क्या! कहाँ? दिखा जरा।''

डिम्पी ने देखा कि परी के एक कान की बाली का ऊपरी बूँदा कहीं गिर गया है और परी अपने हाथ में उसकी शेष लटकन और पेंच लिए रोनी सूरत में खड़ी है।

डिम्पी ने परी को ढाढस बँधाया और कहा कि– ''रुक ढूँढ़ते हैं यहीं कहीं होगा। क्या हुआ था बता?''

परी बताते जा रही थी और दोनों बहनें उस बूँदे को ढूँढती। लेकिन बूँदा मिल नहीं रहा था और दोनों को माँ की डाँट का डर बढ़ता ही जा रहा था।

दस मिनिट की असफल कोशिश के बाद दोनों ने माँ को सारी बात बताने का निर्णय लिया।

डिम्पी माँ जल्दीबाजी में छत से नीचे बुला लाई और सब कुछ एक ही साँस में बता डाला। पहले तो माँ ने भी यही सोचा कि यहीं–कहीं होगा और थोड़ी खोज–बीन करने पर मिल जाएगा।

अब माँ ने अपने नाम के अनुरूप इसी आशा से परी डिम्पी को अपने साथ लगाया और ऐसे शुरु हुआ मिशन 'लॉस्ट एंड फाउण्ड'। और ये मिशन कितनी मशक्कत से पूरा होगा भी यहा नहीं इसके बारे में किसी को क्या ही पता था आशा तो थी ही; मन में भी और आशा माँ भी।

अब सबने मिलकर सारे ओर छान–बीन की; पूरा वॉश बेसिन इस सफाई में चकाचक हो गया; बेसिन की प्लास्टिक पाइप निकालकर ढूँढ़ा गया। पूरे पीवीसी पाइप से इतना पानी डाला गया, इतना पानी डाला गया कि एक–एक पुराने जमे काई–कचरा सब बाहर आ गए।

और तो और पीवीसी पाइप से बाहर आने वाले पानी को भी छन्नी लगाकर पानी के साथ आने वाले एक–एक कचरे का निरीक्षण किया गया। पर दिसम्बर महीने की ठण्डी में ठंडे पानी में की गई इस तीन घण्टे के परिश्रम का फल था 'कुछ भी नहीं'।

अब माँ और डिम्पी का गुस्सा तो सातवें आसमान पर था। डिम्पी और माँ स्वयं को रोक तो रही थी पर एक घण्टे में ही उनके धैर्य ने हाथ खड़े कर दिए और टूट गया धैर्य का बाँध। जब दो घंटे नॉनस्टॉप परी ने लेक्चर सुना, उतना तो शायद उसने पूरे वर्ष के ग्यारह महीने नहीं सुना होगा। पर अभी भी प्रश्न यही था कि बूँदा आखिर है कहाँ?

चरण दो

इसी सोच में माँ को रातभर नींद न आई। सुबह उठते ही आरी पत्ती (ब्लेड) लेकर माँ ने पीवीसी पाइप का एक भाग भी काट डाला। पर हाथ कुछ नहीं आया।

लेकिन आशा की आशा कहाँ झुकने वाली थी; और डिम्पी तो थी ही माँ ही वैकल्पिक हायक। दोनों माँ–बेटी ढूँढ लाई एक स्वीपर भैया को। जिससे शुरु

करवाई गई वहीं जो आप सोच रहे।

हाँ हाँ 'मिशन लॉस्ट एण्ड फाउण्ड' का अगला चरण था– शहरी जल निकासी प्रबंधन प्रणाली ही सफाई और छान–बीन। हाँ भाई, अब हो रही थी नाली की सफाई और कचरे की छान–बीन। स्वीपर भैया के काम की तो हम सब दाद देते हैं पर बूँदा अभी भी नहीं मिला था।

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' और अब हमारा हारता मन दौड़ते–भागते जा पहुँचा, ज्योतिषी चाचा जी के पास। दूरभाष से तुरन्त चाचा जी को फोन मिलाया और सारा कुछ कह सुनाया। चाचा ने भी धैर्य धराया और तुरंत पत्रक मँगवाया।

अब चाचा भी ध्यान में बैठ गए और घण्टे भर बाद बताया कि– ''गुमी हुई चीज उत्तरपूर्व के कोने में किसी सफेद, पीले रंग के क्षेत्र में है। जो शेर ही पूँछ के आकार का है। वस्तु शायद कुछ चुकीली है।''

लो भाई, अब आ गई एक और पहेली और लग गए सबके सब इसे सुलझाने। थोड़ी खोज–बीन भी होती रही पर अन्त में पहेली का अर्थ यही निकाला गया कि शेर की पूँछ पीवीसी पाईप ही हो सकती है। अब सबके फोन और गाड़ी के पहिए घूमने लगे। कोई प्लम्बर, कोई मिस्त्री कोई मजदूर तो मिल जाए जो हमारा काम निपटवाएँ।

ले–देकर आ गए हमारे पूर्व परिचित भैया रवि। जो प्लम्बर भी थे और मिस्त्री भी और हमारे हितैषी भी।

सबने तय किया कि यह मिशन 'लॉस्ट एण्ड फाउंड' का अंतिम चरण होगा। और इस बार आशा माँ का भी यही मत था।

रवि ने अपना काम शुरु किया सबकी दृष्टि पीवीसी पाईप पर थी एक घण्टे के परिश्रम के बाद पाईप खोलकर बाहर निकाल दी गई और पाईप को उल्टा घुमाते ही कुछ कचरे–काई में लिपटा एक गुच्छा बाहर आया। जिसमें किसी चमकती चीज ने सबकी नजरें थाम ली। डिम्पी जोर से चिल्लाई– ''माँ! मिल गया'', ''परी मिल गया।'' ''ये देखो हमने ढूँढ निकाला।'' सबके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। डिम्पी की इस हर्ष मिश्रित आवाज को सुन घर में ट्यूशन पढ़ रहे बच्चे भी आँगन में कतारबद्ध हो इस चमकती बूँदे को देख मुस्कुराने लगे आँगन में ठहाकों की गूँज थी। इस पूरे घटनाक्रम में की गई मशक्कत के सफल होने की खुशी किसी हीरे के मिलने से कम न थी। और हो भी क्यों न जब सोने के भाव आसमान छू रहे हो, तो एक मध्यमवर्गीय परिवार वालों के लिए तो ये सोना ही हीरा था।

सबचे चाचा जी को धन्यवाद किया। चैन की चाय पी और आशा माँ की आशा को सेल्यूट किया जिसने अंत तक अपनी आशा नहीं छोड़ी थी। और चरणबद्ध तरीके से चले आ रहे इस कार्यक्रम के सीधे प्रसारण का आनंद लेते हुए पिताजी ने हमें बनाया घर का खोया–पाया विभाग।

– शहडोल

(मध्य प्रदेश)

पुस्तक परिचय

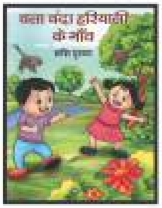

चला चंदा हरियाली के गाँव
मूल्य- २००/-

प्रख्यात बाल साहित्य लेखिका शशि पुरवार की यह कृति, प्रकृति व नीतिपरक दोहों की प्रस्तुति है। लेखिका ने सरल सुबोध भाषा में विषय को सहजता से प्रस्तुत किया है। दोहा हिन्दी का सबसे छोटा छन्द है इसलिए सरलता से याद हो जाता है।

संयुक्त प्रकाशन- पण्डित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी, १५ अकादमी संकुल झालाना संस्थानिक क्षेत्र, झालाना डूँगरी, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-३०२०११ (राज.)
एवं साहित्यागार- धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता (राजस्थान)

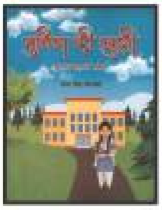

मुनिया की खुशी
मूल्य- २५०/-

नीना सिंह सोलंकी बाल साहित्य में सुपरिचित हो चला हस्ताक्षर है। विशेषकर बाल कहानी के क्षेत्र में आपकी लेखनी सफलता से रचनारत है। प्रस्तुत संग्रह में आपकी १४ बाल कहानियाँ उत्तम कागज पर संपूर्ण बहुरंगी स्वरूप में प्रस्तुत हैं।

प्रकाशक- संदर्भ प्रकाशन, भोपाल (म. प्र.)

चिंटू-पिंटू की सूझ
मूल्य- ९९/-

प्रख्यात बाल साहित्य लेखक, संपादक श्री. दीनदयाल शर्मा की सात बाल कहानियों का यह संकलन राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है। यह इस पुस्तक का पाँचवा संस्करण है।

प्रकाशक- संपर्क प्रकाशन १०/२२, आरएचबी कॉलोनी, हनुमानगढ़ संगम- ३३५५१२ (राजस्थान)

नन्हे जगमग तारे
मूल्य- २९९/-

भारत के राष्ट्रपति जी से 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्राप्त २० होनहार बच्चों की अद्‌भुत प्रेरक प्रतिभा से परिचित कराती सुख्यात बाल साहित्य सर्जक श्री. रजनीकांत शुक्ल की यह पुस्तक हर बच्चे के लिए पठनीय सामग्री प्रस्तुत करने वाली है।

प्रकाशक- ५-जी पब्लिकेशन्स के.ए. ३६३ सेक्टर-१२, प्रताप विहार, गाजियाबाद-२०१००९ (उ. प्र.)

पापा झूठ नहीं बोलते
मूल्य- ९९/-

विख्यात बाल साहित्यकार श्री. दीनदयाल शर्मा द्वारा रचित ७ बाल कथाएँ। यह कृति उत्तराखण्ड में अ. भा. स्तर पर पुरस्कृत की गई है। इन मनोरंजक शिक्षाप्रद बाल कथाओं में श्री. शर्मा की सजग सरल लेखनी का आस्वाद है। यह पुस्तक का द्वितीय संस्करण है।

प्रकाशक- सम्पर्क प्रकाशन १०/२२ आरएचबी कॉलोनी, हनुमानगढ़, संगम-३३५५१२ (राजस्थान)

शाला की पहेलियाँ

– रोचिका अरुण शर्मा

१) मेरी साथी मुझको प्यारी,
शाला की कर लें तैयारी।
तुमको अपने संग ले जाऊँ,
पढ़कर मैं ज्ञानी कहलाऊँ।

२) खोलूं तो खुशबू फैलाए,
मुँह में भी पानी भर आए।
नए स्वाद नित भेजे मम्मी,
खा लूँ तो भर जाए टम्मी।

३) बड़े काम का है यह डिब्बा,
इसमें पेन्सिल रबर रक्खा।
फिट हो जाए स्केल छोटा,
शार्पनर भी साथ में होता।

४) सबके लिए है एक जैसा,
बिन इसके अनुशासन कैसा ?
इसे पहनना बहुत जरूरी,
जूते–मोजों से यह पूरी।

५) अपने कंधों पर लटकाऊँ,
खुश होकर शाला जाऊँ।
पढ़ने का सामान इसी में,
मन बसता अब नहीं किसी में।

– चेन्नई
(तमिलनाडु)

उत्तर– १) पुस्तकें २) टिफिन ३) पेन्सिल बॉक्स ४) गणवेश ५) बस्ता

पुरस्कार

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा।

आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२५ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम- १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र-४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक-बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय ११००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'यात्रा वृत्तान्त' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित यात्रा वृत्तांत की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है। सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/- होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२५

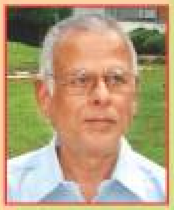

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था विषय पर केन्द्रित बाल कहानियाँ' निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय १२००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

माँ की रसोई

– सुकीर्ति भटनागर

कितनी अच्छी लगती है,
माँ की यह मुझे रसोई।
मीठी–मीठी महक उठे,
जो भूख जगाती सोई।।

बड़े चाव से हलवा वह,
सबके लिए बनाती हैं।
इडली, उपमा, डोसे भी,
कितनी बार खिलाती हैं।।

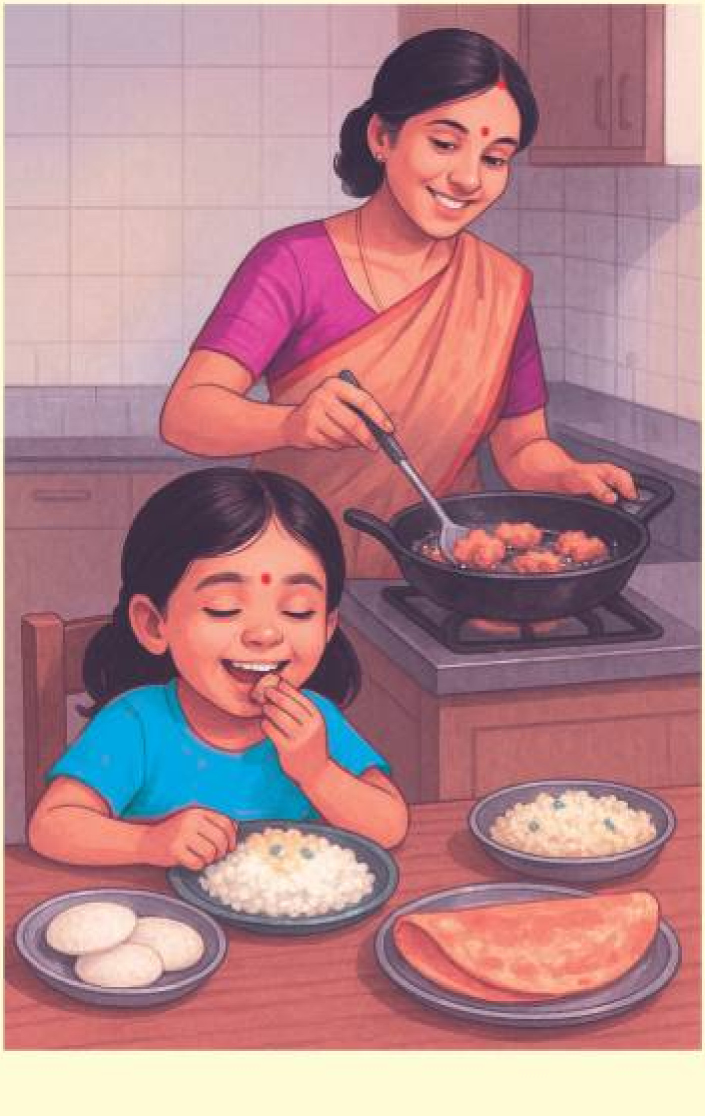

तलती कभी पकौड़े वह,
कभी पराँठे मन भाते।
पेट फूल कुप्पा होता,
नहीं थकूँ खाते–खाते।।

जब भी बनें कढ़ी–चावल,
बाँछें मेरी खिल जातीं।
भर–भर थाली खाती मैं,
मन में तृप्ति समाती।।

पढ़ने बैठूँ जब भी मैं,
सोंधी महक लुभाती है।
ताक–झाँक करने लगती,
माँ क्या आज बनाती है!!

माँ के हाथों में जादू है,
पाक कला का कौशल।
उसके आगे सब फीका है,
क्या ढाबा, क्या होटल।।

– पटियाला (पंजाब)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी